# SAMPLE

**MindSutra Software Technologies**

**A - 16, Ramdutt Enclave, Milap Nagar**

Uttam Nagar, New Delhi - 110059

# श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

यह स्तुति हमारी शक्ति और सच्चे आत्म आनन्द को जानने और उसका अनुभव करने में हमारी सहायता करती है तथा इससे सार्वभौमिक एकता, मधुरता और खुशहाली में प्रगति होगी।

## नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

अर्थ– जो गुड़हल के फूल के समान लाल है, जिसका जन्म कश्यप परिवार में हुआ है, जो बहुत उज्ज्वल है तथा अंधकार का शत्रु है और जो सभी पापों का नाश करता है, मैं उस दिवाकर को प्रणाम करता हूँ।

सार– नव ग्रह केवल भौतिक अर्थों में ही ग्रह या नक्षत्र नहीं हैं, वे केवल नौ में नहीं हैं, बल्कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड के भौतिक अस्तित्व में उपस्थित सभी ग्रहों व नक्षत्रों में अंतर्निहित शक्ति हैं। सूर्य यहां सिर्फ पौधों द्वारा किए जाने वाले प्रकाशसंलेष्ण के लिए भौतिक उर्जा या गर्मी का स्रोत मात्र का प्रतिनिधि नहीं है, अपितु यह संपूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए चेतना का प्रतीक है। जैसकि हम चेतना में जागते हैं, तो हम कम लड़खड़ाते हैं और कम गलतियां व पाप करते हैं तथा चेतना में नहीं उठते हैं, तो अधिक लड़खडाते हैं और अधिक गलतियां व पाप करते हैं (सभी पाप कार्य संपूर्ण स्वास्थ्य के बिगड़ने का कारण होते हैं)। अतः यहां सूर्य का उल्लेख सभी पापों का नाश करने के लिए किया गया है। सूर्य उज्ज्वल है और इसलिए यह अंधेरे का शत्रु हैं, ना केवल भौतिक अर्थों में बल्कि अज्ञानता के अंधकार का शत्रु होने के संदर्भ में भी।

यह स्तुति नींद, जड़त्व और निष्क्रियता पर विजय प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी। यह अवसाद और हताशा पर विजय प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी।

अर्थ– मै उस चंद्रमा को प्रणाम करता हूँ, जो दही, शंख और ओस की बूंदों के समान सुन्दर और दीप्तिमान है, जिसका जन्म समुद्र मंथन से हुआ है, जो शशक का प्रतीक है तथा जो भगवान शिव के मुकुट/मस्तक की शोभा बढ़ाता है।

सार– चंद्रमा की सुन्दरता का वर्णन करने का वास्तविक उद्देश्य उस सिद्धान्त की ओर संकेत करने से है, जो सार्वभौमिक अथवा ब्रह्माण्ड के मस्तिष्क के समान है। ब्रह्माण्डीय मन को पौधों का पालन–पोषण करने वाला कहा जाता है। इससे लगता है कि चंद्रमा से उपचारात्मक गुण पौधों में हस्तांतरित होते हैं। मन संपूर्ण संसार में आरोग्यसाधक के रूप में सुविख्यात है।

जब हम चंद्रमा के सिद्धान्त का व्यक्तिगत स्तर पर विचार करते हैं, तो केंद्रिय तंत्रिका प्रणाली से संबंधित तीन विशेषताएं दिखाई देती हैं– समुद्र के दूध से जन्म होना, शशक के समान होना तथा शिव के मस्तक की शोभा बढ़ाना। मन का जन्म अच्छी तरह से फैले हुए श्वेत तंत्रिका प्रणाली से, बुद्धि के साथ होना तथा मन जब वास्तव में स्वच्छ होता है, तो शिव के मुकुट की अथवा व्यक्तिगत रूप में स्वयं की सुन्दरता को बढ़ाता है।

यह स्तुति कमजोर और कोमल मन को दृढ़ बनाती है तथा व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों से लड़ने और उन पर विजय प्राप्त करने में शक्ति प्रदान करती है।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थ– जिसका जन्म धरती के गर्भ से हुआ है, बिजली के चमकने जैसे उज्ज्वल, और जिसकी शक्तिशाली भुजाएं हैं, मै उस युवा मंगल को प्रणाम करता हूँ।

सार– भारतीय ज्योतिष के अनुसार, मंगल अग्नि के ब्रह्माण्डीय सिद्धान्त का प्रतिनिधित्व करता है तथा शौर्य, उद्यमशीलता, गतिशीलता, प्रलय, भयानक आग, महामारी, दंगे, चक्रवात और युद्ध का कारक माना जाता है। यह स्तुति अग्नि सिद्धान्त को विनियमित करने के लिए अभिप्रेरित करता है तथा इसे रचनात्मक दिशा में श्रृंखलाबद्ध करता है। यह एक राजा के सिद्धान्त के समान है।

संभवतः यह स्तुति उन सभी स्थिति में सहायता करता है, जो उपापचय को कम करे तथा शरीर को मंदगति, आलस्यपूर्ण और कमजोर बनाए। यह उर्जा प्रदान करके शरीर के सभी अंगों को सक्रिय कर सकता है। इसके अतिरिक्त, संभवतः यह शारीरिक प्रणाली के उत्तेजना, क्रोध और अत्यधिक सक्रियता को नियंत्रित करता है।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थ– लालिमा युक्त श्याम वर्ण के दिखने वाले और अशोक के वृक्ष की कली के समान अद्वितीय सुन्दर शांत प्रकृति के बुध को मैं प्रणाम करता हूँ।

यह स्तुति स्पष्ट रूप से बुद्धिमत्ता और संयम से संबंधित है। धूसर बिन्दू मस्तिष्क की बुद्धि को दर्शाता है, जो कि असभ्य और बर्बर भावना व स्वभाव पर नियंत्रण रखता है। अतः यह संयम और अनुग्रह का शासकीय सिद्धांत है।

देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

अर्थ– जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, जो सुनहरे वर्ण के हैं तथा जो त्रिलोक के बुद्धि के स्वामी हैं, उन बुद्धिमान बृहस्पति को मैं प्रणाम करता हूँ।

सार– यह स्तुति स्पष्ट रूप से बुद्धिमान व्यक्ति को समर्पित है, जिसका मस्तिष्क के सभी केन्द्रों पर शासन है और इस प्रकार से वह चेतना के सभी तीन स्तरों स्वप्न, नींद और जागरण पर भी शासन करता है। सुनहरा वर्ण उस श्रेष्ठत्तम प्रकाश का सूचक लगता है, जो प्रत्येक गतिविधि पर शासन करता है। यह केंद्रिय तंत्रिका प्रणाली में जालीदार प्रणाली का प्रतिनिधित्व भी करता है, जो कि मस्तिष्क में सभी केन्द्रों की गतिविधि को सुनिश्चित करता है।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थ– जो बेला के फूल और बर्फ के समान दीप्तिमान हैं, जो असुरों के सर्वश्रेष्ठ गुरु हैं तथा जो सभी शास्त्रों के प्रवक्ता हैं, मैं उस शुक्र को प्रणाम करता हूँ।

सार– यह स्तुति उस शुक्र को समर्पित है, जो भावनाओं एवं अन्तर्निहित प्रकृति के व्यवस्थित प्रशासन के लिए उत्तरदायी सिद्धान्त का सूचक प्रतीत होता है। ब्रह्माण्ड के हित के लिए इस सिद्धान्त के द्वारा यौन शक्ति और भौतिक शक्ति, जो कि दुराचारी हो सकती हैं, उन पर प्रत्यक्ष रूप से शासन किया जाता है। संरचनात्मक रूप से यह मस्तिष्क में संपूर्ण अंग तंत्र के संचालन का प्रतिनिधित्व करता है।

यह स्तुति जीवन और ब्रह्माण्ड के स्थायीकरण, स्फूर्ति, पर्याप्तता, उत्साह और प्रेम का प्रतिफल प्रतीत होता है।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

अर्थ– मै उस स्थिर शनि को प्रणाम करता हूँ, जो नीले काजल के समान आभा वाले हैं, जो सूर्य के पुत्र हैं, यम के बड़े भाई हैं, तथा जिनका जन्म सूर्य और उनकी पत्नि छाया से हुआ है।

सार– यह स्तुति शनिदेव को समर्पित है, जो कि स्थिरता के देवता प्रतीत होते हैं। यदि अनजाने में अभिव्यक्त किया जाता है, तो यह प्रगति को धीमा कर सकता है, यदि उचित रूप से अभिव्यक्त किया जाता है, तो यह असामान्य और अव्यवस्थित घटनाओं को रोक सकता है। 'यम का बड़ा भाई' होना यह दर्शाता है, कि यम जीवन और मृत्यु के नियमन के लिए जिस सिद्धान्त अथवा देवत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसके समायोजन में स्थिरता महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 'सूर्य का पुत्र' होना यह दर्शाता है, कि इसमें ज्ञान और अज्ञानता का प्रकाश व अंधकार की शक्ति है,। यह विकास की सीमा, जैविक क्षमता, शरीर में नकारात्मक उर्जा तंत्र का प्रतिनिधित्व कर सकता है।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थ– मै उस शक्तिमान और साहसी राहु को प्रणाम करता हूँ, जो अर्ध शरीर वाला है, जो सूर्य और चंद्रमा तक

को भी पीड़ित कर सकता है तथा जिसका जन्म सिंहिका के गर्भ से हुआ है।

सार– यह स्तुति राहु को समर्पित है। राहु अंतरिक्ष और समय में स्थित एक बिन्दु है, जब चंद्रमा धरती द्वारा सूर्य के परिक्रमा पथ को काटते हुए उत्तर की ओर चला जाता है।

यह ब्रह्माण्ड आश्चर्यों से भरा हुआ है। इस ब्रह्माण्ड के सृजन और विकास में अनेक समूहों और देवताओं का योगदान है। जो इस जगत में नकारात्मक और बुरा प्रतीत होता है, वह भी इसी सृजन का ही एक भाग है। इसलिए सार्वभौमिक कल्याण के लिए यह स्तुति राहु को समर्पित है।

पौराणिक कथाओं में राहु को विप्रचिती और सिंहिका का पुत्र कहा गया है। ये दो कक्षों के मिलन बिन्दु का प्रतीक जान पड़ता है, जिससे राहु उत्पन्न होता है, ताकि वे मानसिक अंधेरों के लिए उत्तरदायी भौतिक बलों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। अतः व्यक्तिगत दृष्टि कोण से राहु उस स्थान और समय का प्रतिनिधित्व करता है, जब व्यक्ति मानसिक अंधकारों, भ्रम, कमजोर स्मरण शक्ति से पीड़ित होता है, तथा जब वह किसी भूत के अधीन होने का काल्पनिक चित्र बना सकता है।

हालांकि, निद्रा, विस्मृति का उचित सीमा तक होना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है। अतः राहु को शुभ फलदायक कहा जाता है, सिवाय जन्म कुण्डली में स्थित कुछ परिस्थितियों और नक्षत्रों को छोड़कर।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थ– जो पलाश के फूलों के समान लाल है, जो तारों और ग्रहों का मस्तक है और जो रौद्र रूप वाला भयावह है, मै उस केतु को प्रणाम करता हूँ।

सार– यह स्तुति केतु को समर्पित है। केतु वह बिन्दु है, जब चंद्रमा धरती द्वारा सूर्य के परिक्रमा पथ को काटते हुए दक्षिण की ओर चला जाता है।

केतु व्यक्ति के स्वभाव में अथवा ब्रह्माण्ड में हिंसा के सिद्धान्त को दर्शाता है। 'रूद्र' शब्द विनाश का प्रतीक है। सार्वभौमिक एवं साथ ही व्यक्तिगत जीवन में अधिकांश लोगों को विनाश और हिंसा से खतरा होता है। हालांकि, ब्रह्माण्डीय घटनाओं से विनाश और हिंसा को पृथक नहीं किया जा सकता है और जब यह उचित रूप में होता है, तो यह जीवन के आवश्यक और स्वास्थ्यवर्द्धक निर्माण में सहायक होता है। शरीर रचना, शारीरिक क्रिया विज्ञान और गर्भविज्ञान की पुस्तकों में विनाश की अनेक प्रक्रियाओं का वर्णन किया गया है।

अतः व्यक्तिगत जीवन और स्वभाव में हिंसा को नियंत्रित करने वाले केतु की स्तुति कहीं अधिक उचित है।

## फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।।

अर्थ– अब यह स्तुति समाप्त होती है। जो भी व्यक्ति महर्षि व्यास द्वारा रचित इस स्तुति को दिन अथवा रात्रि के समय एकाग्रचित्त और शांतचित्त होकर पढ़ता या सुनता है, वह सभी प्रकार की आपदाओं से मुक्त हो जाता है।

सार– नवग्रहों और नक्षत्रों की स्तुति वास्तविक रूप में व्यक्ति को सच्चे आत्म का ज्ञान करवाता है तथा अब तक अनुपलब्ध उन उर्जा या शक्तियों को प्राप्त करने में सहायता करता है, जो कि विभिन्न रूपों में देवताओं के प्रतीक मानी जाती हैं।

नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।

अर्थ– नर, नारी और शासक को अतुलनीय समृद्धि, स्वास्थ्य और शक्ति की प्राप्ति होती है तथा उनके बुरे स्वप्नों व विचारों का नाश होता है।

सार– सभी ग्रहों और नक्षत्रों की स्तुति से सुख–समृद्धि, स्वास्थ्य व शक्ति प्राप्त होती है। विनाशक गुणों के कारण सभी प्रकार की दरिद्रता, बुरे स्वप्न और बुरे विचार लुप्त हो जाते हैं।

ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः।।

अर्थ– जैसा कि व्यास ऋषि ने कहा है जो कि निःसन्देह, अचूक और सत्य है, कि ग्रहों और नक्षत्रों के अशुभ प्रभाव के कारण उत्पन्न चोर, अग्नि आदि की समस्याएं निरस्त हो जाती हैं।

सार– इस प्रकार महर्षि व्यास इस सत्य की घोषणा करते हैं, कि इन स्तुतियों का जाप व अध्ययन करने से सभी ग्रहों के प्रकोप और आपदाओं से मुक्ति मिलती है।

श्री महर्षि व्यास द्वारा रचित नवग्रह स्तोत्र समाप्त।

# ज्योतिष सारिणी

## मुख्य विवरण

| | |
|---|---|
| जन्म दिनाकं | 12:09:1976(रविवार) |
| जन्म समय | 23:45:00 |
| जन्म स्थान | new delhi |
| अक्षांश | 028:36:00N |
| रेखांश | 077:12:00E |
| यु./ग्रीष्म समय संस्कार | -00:00 |
| जी. एम. टी. समय | 018:15:00 |
| स्थानीय समय | 023:23:48 hrs |
| सांपातिक काल | 022:51:18 hrs |
| स्थानीय समय संस्कार | -000:21:11 |
| अयनांश | N.C.Lahiri(023:31:53) |
| सूर्योदय | 06:07:38AM |
| सूर्यास्त | 06:27:19PM |
| विक्रम संवत | 2033 |
| शक संवत | 1898 |
| संवत्सर | नल/अनल |
| संवत्सर अधिपति | इन्द्राग्नि |

## घात चक्र

| | |
|---|---|
| राशि (सूर्य) | कुम्भ |
| मास | फाल्गुन |
| तिथि | 5,10,15 |
| वार | शुक्रवार |
| नक्षत्र | अश्लेषा |
| प्रहर | 4 |
| लग्न | सिहं |
| सूर्य सिद्धान्त योग | वज्र |
| करण | चतुश्पद |

## अवकहड़ा चक्र

| | |
|---|---|
| लग्न | मिथुन |
| लग्नाधिपति | बुध |
| राशि (चन्द्रमा) | मेष |
| राशिपति | मंगल |
| नक्षत्र | अश्विनी |
| नक्षत्रपति | केतु |
| नक्षत्र चरण | 4 |
| ऋतु | बसन्त |
| मास | चैत्र |
| पक्ष | कृष्ण |
| तिथि | चतुर्थी |
| तिथि श्रेणी | रिक्ता |
| तिथि पति | बुध |
| करण | बल्लव |
| करण श्रेणी | चर |
| करणपति | ब्रहमा |
| गण | देव |
| योनि | हस्त (स्त्री) |
| वर्ण | क्षत्रिय |
| सूर्य सिद्धान्त योग | ध्रुव |
| रज्जु | पद |
| वश्य | चतुश्पद |
| तत्व | पृथ्वी |
| विहग | भारधंक |
| तत्वाधिपति | बुध |
| नाड़ी | आदि |
| नाड़ी पद | अन्त |
| वेध | ज्येष्ठा |
| आद्याक्षर | La |
| पाया | स्वर्ण |

# ग्रह स्थिती

## लग्न कुण्डली

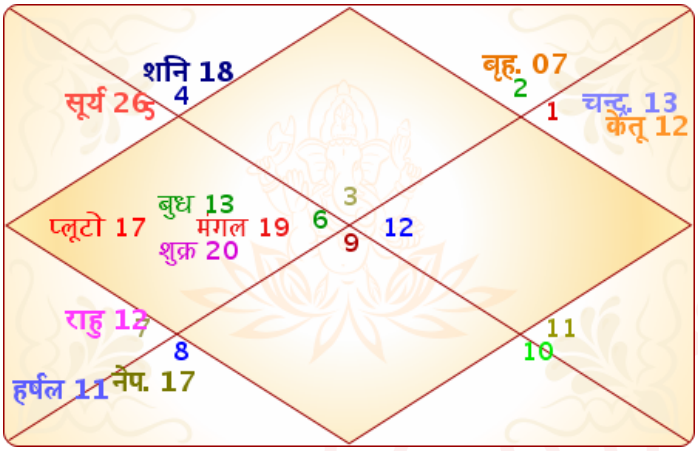


## नवांमश कुण्डली

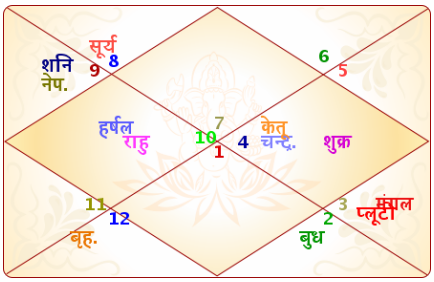


## चन्द्र कुण्डली

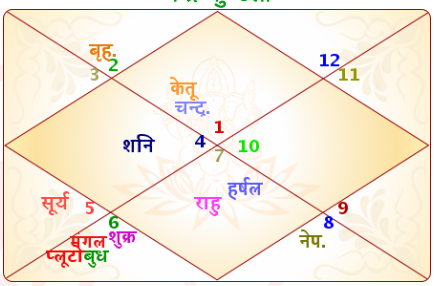


## ग्रह स्थिती

| ग्रह | राशि | अंश | गति | रा. पति | नक्षत्र | च. | न | न. पति | नवांश | नव. पति | विशेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | मिथुन | 03:13:53 | ... | बुध | मृगशिर | 3 | 5 | मंगल | तुला | शुक्र | |
| सूर्य | सिहं | 26:33:30 | 00:58:23 | सूर्य | पुर्वफाल्ग | 4 | 11 | शुक्र | वृश्चिक | मंगल | स्व राशि |
| चन्द्रमा | मेष | 13:13:32 | 11:47:03 | मंगल | अश्विनी | 4 | 1 | केतु | कक्र | चन्द्रमा | सम राशि |
| मंगल | कन्या | 19:05:47 | 00:39:17 | बुध | हस्ता | 3 | 13 | चन्द्रमा | मिथुन | बुध | शत्रु राशि |
| बुध (व.) | कन्या | 13:32:00 | 00:25:03 | बुध | हस्ता | 2 | 13 | चन्द्रमा | वृष | शुक्र | उच्च राशि |
| बृहस्पति | वृष | 07:35:28 | 00:01:24 | शुक्र | कृतिका | 4 | 3 | सूर्य | मीन | बृहस्पति | शत्रु राशि |
| शुक्र | कन्या | 20:00:20 | 01:13:39 | बुध | हस्ता | 4 | 13 | चन्द्रमा | कक्र | चन्द्रमा | नीच राशि |
| शनि | कक्र | 18:34:30 | 00:06:39 | चन्द्रमा | अश्लेषा | 1 | 9 | बुध | धनु | बृहस्पति | शत्रु राशि |
| राहु (व.) | तुला | 12:11:19 | 00:03:10 | शुक्र | स्वाति | 2 | 15 | राहु | मकर | शनि | स्व नक्षत्र |
| केतु (व.) | मेष | 12:11:19 | 00:03:10 | मंगल | अश्विनी | 4 | 1 | केतु | कक्र | चन्द्रमा | स्व नक्षत्र |
| हर्षल | तुला | 11:09:37 | 00:02:55 | शुक्र | स्वाति | 2 | 15 | राहु | मकर | शनि | ... |
| नेपच्यून | वृश्चिक | 17:46:42 | 00:00:40 | मंगल | ज्येष्ठा | 1 | 18 | बुध | धनु | बृहस्पति | ... |
| प्लूटो | कन्या | 17:13:04 | 00:02:13 | बुध | हस्ता | 3 | 13 | चन्द्रमा | मिथुन | बुध | ... |

## ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

| | लग्न | सूर्य | चन्द्रमा | मंगल | बुध | बृहस्पति | शुक्र | शनि | राहु | केतु | हर्षल | नेपच्यून | प्लूटो |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | .. | 83 | 310 | 106 | 100 | 334 | 107 | 45 | 129 | 309 | 128 | 165 | 104 |
| सूर्य | 277 | .. | 227 | 23 | 17 | 251 | 23 | 322 | 46 | 226 | 45 | 81 | 21 |
| चन्द्रमा | 50 | 133 | .. | 156 | 150 | 24 | 157 | 95 | 179 | 359 | 178 | 215 | 154 |
| मंगल | 254 | 337 | 204 | .. | 354 | 228 | 1 | 299 | 23 | 203 | 22 | 59 | 358 |
| बुध | 260 | 343 | 210 | 6 | .. | 234 | 6 | 305 | 29 | 209 | 28 | 64 | 4 |
| बृहस्पति | 26 | 109 | 336 | 132 | 126 | .. | 132 | 71 | 155 | 335 | 154 | 190 | 130 |
| शुक्र | 253 | 337 | 203 | 359 | 354 | 228 | .. | 299 | 22 | 202 | 21 | 58 | 357 |
| शनि | 315 | 38 | 265 | 61 | 55 | 289 | 61 | .. | 84 | 264 | 83 | 119 | 59 |
| राहु | 231 | 314 | 181 | 337 | 331 | 205 | 338 | 276 | .. | 180 | 359 | 36 | 335 |
| केतु | 51 | 134 | 1 | 157 | 151 | 25 | 158 | 96 | 180 | .. | 179 | 216 | 155 |
| हर्षल | 232 | 315 | 182 | 338 | 332 | 206 | 339 | 277 | 1 | 181 | .. | 37 | 336 |
| नेपच्यून | 195 | 279 | 145 | 301 | 296 | 170 | 302 | 241 | 324 | 144 | 323 | .. | 299 |
| प्लूटो | 256 | 339 | 206 | 2 | 356 | 230 | 3 | 301 | 25 | 205 | 24 | 61 | .. |

# विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (अयनाश : 023:31:53) चन्द्रमा 0.0 व.0.0 म.21 द.

| क्र0 स0 | ग्रह दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | केतु | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 12:09:1976 |
| 2 | शुक्र | 20.0 y.0.0 m.0 d. | 03:10:1976 |
| 3 | सूर्य | 6.0 y.0.0 m.0 d. | 03:10:1996 |
| 4 | चन्द्रमा | 10.0 y.0.0 m.0 d. | 03:10:2002 |
| 5 | मंगल | 7.0 y.0.0 m.0 d. | 03:10:2012 |
| 6 | राहु | 18.0 y.0.0 m.0 d. | 03:10:2019 |
| 7 | बृहस्पति | 16.0 y.0.0 m.0 d. | 03:10:2037 |
| 8 | शनि | 19.0 y.0.0 m.0 d. | 03:10:2053 |
| 9 | बुध | 17.0 y.0.0 m.0 d. | 03:10:2072 |

### केतु दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| केतु | |
| शुक्र | |
| सूर्य | |
| चन्द्रमा | |
| मंगल | |
| राहु | |
| बृहस्पति | |
| शनि | |
| बुध | 12:09:1976 |

### शुक्र दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 03:10:1976 |
| सूर्य | 02:02:1980 |
| चन्द्रमा | 02:02:1981 |
| मंगल | 03:10:1982 |
| राहु | 03:12:1983 |
| बृहस्पति | 03:12:1986 |
| शनि | 04:08:1989 |
| बुध | 03:10:1992 |
| केतु | 04:08:1995 |

### सूर्य दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 03:10:1996 |
| चन्द्रमा | 21:01:1997 |
| मंगल | 22:07:1997 |
| राहु | 27:11:1997 |
| बृहस्पति | 22:10:1998 |
| शनि | 10:08:1999 |
| बुध | 22:07:2000 |
| केतु | 29:05:2001 |
| शुक्र | 03:10:2001 |

### चन्द्रमा दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 03:10:2002 |
| मंगल | 04:08:2003 |
| राहु | 04:03:2004 |
| बृहस्पति | 03:09:2005 |
| शनि | 03:01:2007 |
| बुध | 03:08:2008 |
| केतु | 03:01:2010 |
| शुक्र | 04:08:2010 |
| सूर्य | 03:04:2012 |

### मंगल दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| मंगल | 03:10:2012 |
| राहु | 01:03:2013 |
| बृहस्पति | 20:03:2014 |
| शनि | 23:02:2015 |
| बुध | 03:04:2016 |
| केतु | 01:04:2017 |
| शुक्र | 28:08:2017 |
| सूर्य | 28:10:2018 |
| चन्द्रमा | 04:03:2019 |

### राहु दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| राहु | 03:10:2019 |
| बृहस्पति | 16:06:2022 |
| शनि | 09:11:2024 |
| बुध | 15:09:2027 |
| केतु | 04:04:2030 |
| शुक्र | 22:04:2031 |
| सूर्य | 22:04:2034 |
| चन्द्रमा | 17:03:2035 |
| मंगल | 15:09:2036 |

### बृहस्पति दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 03:10:2037 |
| शनि | 21:11:2039 |
| बुध | 04:06:2042 |
| केतु | 09:09:2044 |
| शुक्र | 16:08:2045 |
| सूर्य | 15:04:2048 |
| चन्द्रमा | 02:02:2049 |
| मंगल | 04:06:2050 |
| राहु | 10:05:2051 |

### शनि दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| शनि | 03:10:2053 |
| बुध | 06:10:2056 |
| केतु | 16:06:2059 |
| शुक्र | 25:07:2060 |
| सूर्य | 24:09:2063 |
| चन्द्रमा | 06:09:2064 |
| मंगल | 07:04:2066 |
| राहु | 16:05:2067 |
| बृहस्पति | 23:03:2070 |

### बुध दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| बुध | 03:10:2072 |
| केतु | 01:03:2075 |
| शुक्र | 27:02:2076 |
| सूर्य | 28:12:2078 |
| चन्द्रमा | 03:11:2079 |
| मंगल | 04:04:2081 |
| राहु | 01:04:2082 |
| बृहस्पति | 18:10:2084 |
| शनि | 24:01:2087 |

# गोचर शनि

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर। सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

## प्रथम चक्र

| साढ़ेसाती चक्र | गोचर राशि में | आरम्भ का समय | समाप्ति का समय | भ्रमण काल (व—म—दि) | शनि मूर्ति |
|---|---|---|---|---|---|
| अष्टम शनि | वृश्चि. | 21/12/1984 | 01/06/1985 | 0.0 y.5.0 m.10 d. | स्वर्ण |
| अष्टम शनि | वृश्चि. | 17/09/1985 | 17/12/1987 | 2.0 y.3.0 m.0 d. | रजत |

## द्वितिय चक्र

| साढ़ेसाती चक्र | गोचर राशि में | आरम्भ का समय | समाप्ति का समय | भ्रमण काल (व—म—दि) | शनि मूर्ति |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम ढ़ैय्या | मीन | 02/06/1995 | 10/08/1995 | 0.0 y.2.0 m.9 d. | ताम्र |
| प्रथम ढ़ैय्या | मीन | 16/02/1996 | 17/04/1998 | 2.0 y.1.0 m.30 d. | लौह |
| द्वितिय ढ़ैय्या | मेष | 17/04/1998 | 07/06/2000 | 2.0 y.1.0 m.21 d. | रजत |
| द्वितिय ढ़ैय्या | वृष | 07/06/2000 | 23/07/2002 | 2.0 y.1.0 m.15 d. | स्वर्ण |
| द्वितिय ढ़ैय्या | वृष | 08/01/2003 | 07/04/2003 | 0.0 y.2.0 m.28 d. | लौह |
| कंटक शनि | कर्क | 06/09/2004 | 13/01/2005 | 0.0 y.4.0 m.7 d. | ताम्र |
| कंटक शनि | कर्क | 26/05/2005 | 01/11/2006 | 1.0 y.5.0 m.7 d. | लौह |
| कंटक शनि | कर्क | 10/01/2007 | 16/07/2007 | 0.0 y.6.0 m.5 d. | स्वर्ण |
| अष्टम शनि | वृश्चि. | 02/11/2014 | 26/01/2017 | 2.0 y.2.0 m.24 d. | ताम्र |
| अष्टम शनि | वृश्चि. | 21/06/2017 | 26/10/2017 | 0.0 y.4.0 m.6 d. | लौह |

## तृतिय चक्र

| साढ़ेसाती चक्र | गोचर राशि में | आरम्भ का समय | समाप्ति का समय | भ्रमण काल (व—म—दि) | शनि मूर्ति |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम ढ़ैय्या | मीन | 29/03/2025 | 03/06/2027 | 2.0 y.2.0 m.6 d. | स्वर्ण |
| प्रथम ढ़ैय्या | मीन | 20/10/2027 | 23/02/2028 | 0.0 y.4.0 m.5 d. | स्वर्ण |
| द्वितिय ढ़ैय्या | मेष | 03/06/2027 | 20/10/2027 | 0.0 y.4.0 m.18 d. | स्वर्ण |
| द्वितिय ढ़ैय्या | मेष | 23/02/2028 | 08/08/2029 | 1.0 y.5.0 m.14 d. | लौह |
| द्वितिय ढ़ैय्या | मेष | 05/10/2029 | 17/04/2030 | 0.0 y.6.0 m.12 d. | रजत |
| द्वितिय ढ़ैय्या | वृष | 08/08/2029 | 05/10/2029 | 0.0 y.1.0 m.28 d. | लौह |
| द्वितिय ढ़ैय्या | वृष | 17/04/2030 | 31/05/2032 | 2.0 y.1.0 m.14 d. | रजत |
| कंटक शनि | कर्क | 13/07/2034 | 27/08/2036 | 2.0 y.1.0 m.15 d. | ताम्र |
| अष्टम शनि | वृश्चि. | 11/12/2043 | 23/06/2044 | 0.0 y.6.0 m.12 d. | रजत |
| अष्टम शनि | वृश्चि. | 30/08/2044 | 08/12/2046 | 2.0 y.3.0 m.9 d. | स्वर्ण |

# उपयुक्त रत्न का सुझाव

## लग्नाधिपति के लिए रत्न

### लग्नाधिपति (लग्न का स्वामी) – बुध

आपका लग्नेश उच्चस्थ है और बहुत शक्तिशाली है। इसलिए आपको  के लिए कोई रत्न धारण करना आवश्यक नहीं है। फिर भी यदि आपकी इच्छा है तो आप इस ग्रह के लिए रत्न धारण कर सकते हैं।

## बुध के लिए रत्न

### पन्ना की भौतिक संरचना

पन्ना एक काफी आकर्षक रत्न है। पन्ना काफी कठोर होता है, लेकिन इसे आसानी से काटा जा सकता है। यह गहरा एवं चमकदार हरा रंग में पाया जाता है। यह सामंजस्य, प्रकृति के प्रति प्रेम, खुशहाली एवं आनन्द का सूचक है। हरा जेड, पेरिडोट, हरा तुरमली, सवोराइट, हरा डायोप्साइड इत्यादि पन्ना के ऊपरत्न हैं।

### पन्ना धारण करने के फायदे

पन्ना धारण करने से सफलता, सौभाग्य एवं खुशहाली प्राप्त होती है। इससे बुद्धि तीव्र होती है तथा सीखने की योग्यता, दूरदर्शिता, स्मरण शक्ति, विश्वास, अन्तर्दृष्टि एवं सूक्ष्म–दृष्टि का विकास होता है। पन्ना धारण करना स्वास्थ्य– विशेषकर तंत्रिका एवं आंखों के लिए लाभदायक होता है। इससे विषयवस्तु के पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति में मदद मिलती है। यह विषैले जीवों एवं ईर्ष्यालू व्यक्तियों के भय से बचाता है। पन्ना जहर का नाश एवं पाचन में मदद करता है। पन्ना धारक को प्रेत साया से दूर रखता है एवं पापों से मुक्ति दिलाता है। पन्ना धारण करने से अन्न, धन, सम्पत्ति एवं वंश में वृद्धि होती है।

## रोगों पर पन्ना का प्रभाव

पन्ना धारण करने या पन्ना की भस्म का सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं– पथरी, गुदा की गांठ, बहुमूत्र, खून गिरना, बवासीर, पित्त ज्वर, ज्वर, खांसी, गुर्दे का विकार, रक्त–विकार, आधासीसी इत्यादि।

## धारण करने के नियम पन्ना

बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित पन्ना ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोत्तरी होगी। पन्ना सोने से बनी अंगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। पन्ना इस तरह धारण करना चाहिए कि यह निरंतर त्वचा के संपर्क में रहे। इसलिए अंगूठी में धारण करना ज्यादा लाभदायक होगा। पन्ना का वजन 3–7 कैरेट (3–7 रत्ती) होना चाहिए। पुरुषों को दायें हाथ में धारण करना चाहिए। यदि बुध मिथुन या कन्या राशि में हो या अश्लेषा, ज्येष्ठा एवं रेवती नक्षत्र में हो तथा बुध अथवा सूर्य के नवमांश में बुध स्थित हो तो बुधवार के दिन सूर्योदय से लेकर दो घंटे बाद सोने की अंगूठी में पन्ना जड़वाकर धारण करना चाहिए।

बुधवार के दिन सूर्योदय से दो घंटे के बाद नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईया चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अंगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अंगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले बुध देवता के बीज मंत्र का 9 बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋगवेद मंत्र का एक–एक बार जाप करें। तदुपरान्त बुध अष्टोत्तर शतनामावली (बुध ग्रह के 108 नाम) का जाप करें। इसके उपरांत बुध देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अंगूठी को कनिष्ठिका अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें।

## पन्ना दान की विधि

### यंत्र

चांदी के पत्र पर यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में पन्ना जड़वाकर उसकी प्राण–प्रतिष्ठा करें। फिर बुध मंत्र से पन्ने को बुधवार के दिन अभिमंत्रित करें। 64 दिन तक लगातार उपरोक्त मंत्र का जप करते हुए यंत्र की विधिवत् पूजा

| | | |
|---|---|---|
| 9 | 4 | 11 |
| 10 | 8 | 6 |
| 5 | 12 | 7 |

करते रहें। तत्पश्चात्, सोना, मूंगा, कांस्य, घी, शक्कर, कपूर, हरा वस्त्र, हाथी दांत, एवं दक्षिणा सहित यंत्र ब्राह्मण को दान कर दें। बुधवार के दिन 10 बजे तक इस दान को करने से श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है।

### पन्ना के प्रभाव की अवधि

अंगुठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर 3 वर्ष तक पन्ना प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद पन्ना का प्रभाव नष्ट हो जाता है। अतः उपरोक्त अवधि के बाद पन्ना बदल देना चाहिए।

## नवमेश के लिए रत्न

### नवमेश–

चूंकि आपका नवमेश आपकी कुण्डली में किसी त्रिक भाव का स्वामी है, इसलिए नवमेश के लिए कोई रत्न धारण करना आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा।

## योग–कारक ग्रह के लिए रत्न

### योग–कारक ग्रह –

आपकी जन्मकुण्डली में कोई प्राकृतिक योग––कारक ग्रह नहीं है।

## तात्कालिक योग–कारक ग्रह के लिए रत्न

### तात्कालिक योग–कारक ग्रह –

ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में तात्कालिक योग––कारक ग्रह है।

चूंकि आपकी जन्मकुण्डली में तात्कालिक योग–कारक ग्रह नीचस्थ है, इसलिए आपको किसी योग्य भविष्यवक्ता की सलाह पर ग्रह के लिए रत्न धारण कर सकते हैं।

## शुक्र के लिए रत्न

### हीरा की भौतिक संरचना

हीरा एक बहुत ही कठोर पत्थर है, जो सामान्यतः षष्टभुजाकार, अष्टभुजाकार एवं बारहभुजाकार होता है। इसके फलक काफी तीव्र होते हैं। क्रिस्टलीय रचना वाला, पारदर्शी, चमकीला एवं धब्बारहित हीरा उत्तम माना जाता है। हीरे का कोई मूल रंग नहीं होता है, यह कई रंगों में पाया जाता है। रॉक क्रिस्टल, सफेद जरकॉन, गोशेनाइट एवं सफेद टोपाज हीरे के ऊपरत्न हैं।

### हीरा धारण करने के फायदे

हीरा धारण करने से शुद्धता एवं निर्भयता आती है तथा जातक को कलात्मक योग्यता एवं सांसारिक खुशहाली प्राप्त होती है। इसे धारण करने से हड्डियां मजबूत होती हैं एवं यौन रोगों से लड़ने की शक्ति प्राप्त होती है। इससे धारक अधिक आकर्षक दिखता है तथा आपसी रिश्तों में मजबूती आती है। इससे प्रेम, संतुलन, स्पष्टता, गहराई, समृद्धि, साहस, शुद्धता, आशा, बुद्धि एवं विवेक में बढ़ोत्तरी होती है। हीरा धारण करने से किसी भी चीज की गहराई तक पहुंचने में मदद मिलती है। हीरा पाचन में लाभकारी होता है एवं धारक को हृष्ट–पुष्ट बनाता है। हीरा धारण करने से धारक धनवान, पुत्रवान एवं सौभाग्यशाली होता है।

### रोगों पर हीरा का प्रभाव

हीरा धारण करने या हीरे की भस्म का सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं– पागलपन, नपुंसकता, मिर्गी, मंदाग्नि, आधसीसी, वीर्य की कमी, वायु प्रकोप, अतिसार इत्यादि।

### धारण करने के नियम हीरा

बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित हीरा ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोत्तरी होगी। हीरा सोना, प्लेटिनम, अष्टधातु या चांदी से बनी अंगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। हीरा इस तरह धारण करना

चाहिए कि यह निरंतर त्वचा के संपर्क में रहे। इसलिए अंगूठी में धारण करना ज्यादा लाभदायक होगा। हीरा का वजन कम से कम 1/4 या 1/2 कैरेट ( कम से कम 1 रत्ती) होना चाहिए। पुरुषों को दायें हाथ में धारण करना चाहिए। जब वृष, तुला या मीन राशि पर शुक्र हो या शुक्रवार के दिन भरणी, पूर्वाफाल्गुनी या पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो, उस मुहुर्त में सूर्योदय से 11 बजे तक सोने में हीरा जड़वाना चाहिए। शुक्रवार के दिन यदि पुष्य नक्षत्र हो तो उस दिन अंगूठी धारण करना विशेष शुभ होता है।

शुक्रवार के दिन सूर्योदय के समय नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईया चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अंगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अंगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले शुक्र देवता के बीज मंत्र का 16 बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋगवेद मंत्र का एक–एक बार जाप करें। तदुपरान्त शुक्र अष्टोत्तर शतनामावली का जाप करें। इसके उपरांत शुक्र देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अंगूठी को मध्यमा या अनामिका अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें।

## हीरा दान की विधि

### यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| 11 | 6 | 13 |
| 12 | 10 | 8 |
| 7 | 14 | 9 |

चांदी के पत्र पर शुक्र यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में हीरा जड़वाकर उसकी प्राण प्रतिष्ठा करें। फिर ओम् ऐं जं गीं शुक्राय नमः मंत्र से हीरे को शुक्रवार के दिन अभिमंत्रित करें। 49 दिन तक लगातार उपरोक्त मंत्र का जप करते हुए यंत्र की विधिवत् पूजा करते रहें। तत्पश्चात् सोना, चांदी, मिश्री, दूध, दही, चंदन, सफेद वस्त्र एवं

दक्षिणा सहित यंत्र ब्राह्मण को दान कर दें।

## हीरा के प्रभाव की अवधि

अंगुठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर 7 वर्ष तक हीरा प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद हीरा का प्रभाव नष्ट हो जाता है। अतः 7 वर्ष के बाद हीरा बदल देना चाहिए।

# जन्म राशि के आधार पर रूद्राक्ष का सुझाव

**आपकी जन्म राशि  है। आपके लिए त्रिमुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।**

इस रूद्राक्ष के इष्टदेव अग्नि हैं। यह आत्मविश्वास बढ़ाता है, तनाव कम करता है, ताप से बचाता है, आग के भय को कम करता है एवं पापों को नष्ट करता है।

तीनमुखी रूद्राक्ष को रविवार के दिन सूर्योदय से पूर्व पवित्र होकर लाल धागे में पिरोकर ब्रह्मा विष्णु देवाय नमः का जप करते हुए गले में धारण करें।

**आपकी जन्म राशि  है। आपके लिए पंचमुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।**

इस रूद्राक्ष के इष्टदेव सदाशिव हैं। यह पांचों तत्वों को दर्शाता है तथा स्वास्थ्य, सफलता, शांति और खुशहाल जीवन प्रदान करता है।

पांचमुखी रूद्राक्ष को लाल धागे में पिरोकर शिव के पंचाक्षर मंत्र ऊँ नमः शिवाय का यथाशक्ति जप कर गले में धारण करें।

## रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय

सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अतिरिक्त, रूद्राक्ष धारण करने के लिए निम्नलिखित शुभ समय हैं–

## शुभ महीना/माह

आश्विन एवं कार्तिक माह–– उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह–– मध्यम
आषाढ़ एवं श्रावण माह–– अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास)–– अशुभ।

## शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम––राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

## शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

## शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णामसी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

## शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कक्र, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुम्भ लग्न शुभ होता है।

## शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, राहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी, एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

## रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि

प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत्त होकर मुख शद्धि करें। अशुद्ध मुंह से जप करने से उचित फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिव्हा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ।।

इसके बाद स्नान के लिए यथा संभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें। पूजा प्रारम्भ करने से पहले भूमि शुद्धि अवश्य करें। भूमि शुद्धि मंत्र–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्ध जल से भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण––प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी––देवताओं का आह्वान कर रूद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रूद्राक्ष को स्नान करायें, फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान करायें। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनायें और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रूद्राक्ष रखें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अब स्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जप करें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।
ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें–

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें–

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें–

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें –

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

अब रूद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें–

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः ।
भवेभवेनाति भवेभावस्वमान भवोद्भवाय नमः ।।

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रूद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें–

ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविकरणाय नमः, ॐ बलविकरणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय नमः।

फिर रूद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें –

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्योः घोर घोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।।

फिर रूद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें –

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोद्यात्।

चंदन का लेप करने पश्चात रूद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें –

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ।।

## त्रिमुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

### विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य श्री अग्नि मंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिः, गायत्री छन्दः, अग्नि देवता, ह्रीं बीजं, ह्रूं शक्तिः, चतुर्वर्ग सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे च जपे विनियोगः।

## ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों को स्पर्श करें।

ॐ वसिष्ठ ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, अग्निदेवतायै नमः हृदि, ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये, ह्रूं शक्तये नमः पादयो, विनियोगायै नमः सर्वांगे।

## करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमश अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल––करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ रं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ इं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रूं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ॐ करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

## हृदयादिन्ययास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ रं शिरसे स्वाहा, ॐ इं शिखायै वषट्, ॐ ह्रीं कवचाय हुम्। ॐ ह्रूं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ॐ अस्त्राय फट्।

## ध्यान मंत्र –

अष्टशक्तिं स्वस्तिकामातिमुचैर्दीर्घैरेभिर्धारयन्त जपाभम्।
हेमकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्दहिनं बद्धमौलिं जराभिः।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छींटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१–ॐ धुं धुं नमः
२–ॐ वुम्
३–ॐ ॐ नमः
४–ॐ क्लीं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)
५–ॐ रं हैं ह्रीं हूं औं (मूल मंत्र)
६–ह्र नमः शिवाय
७–ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्।

## पंचमुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

### विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य श्री मंत्रस्य ब्रह्माऋषि:, गायत्री छन्द:, सदाशिव कालाग्नि रुद्रो देवता, ॐ बीजं, स्वाहा शक्ति:, रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोग:।

### ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों को स्पर्श करें।

ब्रह्मऋषि: नम: शिरसि, गायत्री छन्दसे नम: मुखे, सदाशिव कालाग्निरुद्रो देवतायै नमो हृदि, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, स्वाहा शक्ति: नम: पादयो, विनियोगाय नम: सर्वांगे।

### करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमश अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल––करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नम:, ॐ ह्रां तर्जनीभ्यां नम:, ॐ आं मध्यमाभ्यां नम:, ॐ क्ष्म्यौं अनामिकाभ्यां नम:, ॐ स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नम:, ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां नम:।

### हृदयादिन्ययास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नम:, ॐ ह्रां शिरसे स्वाहा, ॐ आं शिखायै वषट्, ॐ क्ष्म्यौं कवचाय हुम्। ॐ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा अस्त्राय फट्।

### ध्यान मंत्र –

हावभावविलसार्द्धनारिकं भीषणार्धमथवा महेश्वरम्।
दाशसोत्पलकपालशूलिनं चिन्तये जपविधौ विभूतये।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छींटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१–ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा (मूल मंत्र)

२-ॐ श्रीं नमः

३-ॐ ह्राम्

४-ॐ हूं नमः

५-ॐ ह्रीं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

६-ॐ नमः शिवाय

७-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्।

## रूद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रूद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रूद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात, रूद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रूद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ऊँ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव का ध्यान करते हुए रूद्राक्ष धारण करें या पूजा स्थल पर रख सकते हैं।

## रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात निम्न नियमों का पालन करना चाहिए –

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।
श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ।।

. रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या अन्य कोई तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।
. रूद्राक्ष को दिखावे की चीज ना बनायें।
. रात में रूद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सबुह सारे क्रिया––कर्म से निवृत्त होकर ऊँ नमः शिवाय का पांच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजा स्थल पर ही रखें।
. अभिमान ना करें।
. परोपकार करें।
. रूद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग ना करें।
. क्रोध ना करें।
. अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें।
. किसी को अपशब्द ना कहें।
. ब्रह्मचर्य का पालन करें।
. रूद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।
. नहाते समय साबुन आदि ना लगायें।
. रूद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।
. रूद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।
. हमेशा नित्यकर्म से निवृत होकर एवं पवित्र होकर ही रूद्राक्ष धारण करें।
. किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निन्दा ना करें।

. गंदगी से दूर रहें।

. रूद्राक्ष के प्रति निष्ठा रखें।

. रूद्राक्ष माला को कभी भी खूंटी पर ना लटकायें।

. रूद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

. शवयात्रा में माला पहनकर ना जायें।

## रूद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जांच

### जांच संख्या 1 –

पानी की उपरी सतह पर रूद्राक्ष रखने से यदि यह डूब जाता है, तो रूद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष नकली है।

### जांच संख्या 2 –

असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता है और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तांबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटकाकर तांबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल––गोल घूमने लगेगें। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है, तो ये असली हैं।

### जांच संख्या 3 –

एक कप दूध के अन्दर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखें। यदि दूध खराब नहीं होता है, तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो यह झूठा है।

# सर्व ग्रह दोष और उपाय

## सूर्य से संबंधित दोष और उनके उपाय

## सूर्य ग्रह के साधारण उपाय

प्रातः उठने के बाद मुँह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुँह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से दूर रहें।
4– अकारण ही क्रोध करने से बचें।

## चन्द्रमा से संबंधित दोष और उनके उपाय

यदि आपका जन्म आपके अपने भाई–बहनों अथवा अपने माता–पिता के नक्षत्र में हुआ है, तो एक नक्षत्र जन्मदोष लागू होता है। इस दोष की वजह से आपके पूरे परिवार की सुख–शांति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।

**शांति के उपाय –**

अपने घर में किसी साफ–सुथरे स्थान पर पूजा बेदी का निर्माण करें और उस पूजा स्थान से ईशान कोण में एक कलश स्थापना करें। उस कलश को नये वस्त्र से ढक दें। देवताओं की पूजा के पश्चात सारे नक्षत्रों की पूजा करें। उसके बाद कलश पर जन्म नक्षत्र के देवता की विशेष रूप से पूजा करें। जन्म नक्षत्र के मंत्र से 108 आहुतियां देकर हवन करें। अपनी सामर्थ्य अनुसार अन्न, वस्त्र आदि का दान करें। जब चंद्रमा बड़े बिम्ब वाला हो, शुभ लग्न हो तथा रिक्ता तिथि एवं भद्रा करण ना हो, तो चंद्रमा के अनुकूल गोचर में यह उपाय करें।

### सपात (चंद्रमा राहु या केतु के साथ) चन्द्र दोष

यदि आपकी जन्म कुण्डली में चंद्रमा राहु या केतु के साथ स्थिति है, तो आपकी कुण्डली में सपात चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

### आपकी कुण्डली में सपात चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

**शांति के उपाय –**

आपको त्र्यम्बक मंत्र का संपुट लगाकर रूद्रसूक्त का पाठ करना चाहिए। हर साल अपने जन्मदिवस के दिन प्रातः घी में दूब को डूबोकर त्र्यबकम मंत्र से 28 या 108 आहूतियां दें। उस दिन व्रत भी रखें।

### गण्डमूल दोष

यदि आपका जन्म नक्षत्र रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, मूल, श्लेषा या मघा है, तो आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू होता है।

### आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू हो रहा है।

**शांति के उपाय –**

भगवार शंकर की पूजा करें। गण्डमूल शांति के लिए जन्म के बारहवें दिन, सताइसवें दिन या एक साल के भीतर कभी भी जन्म नक्षत्र में गण्डमूल की शांति करवा लेनी चाहिए।

## चन्द्रमा ग्रह के साधारण उपाय

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा–धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जप करें। चंद्रमा कवच का पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस–मदिरा का सेवन ना करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।

2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।

3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से बचना चाहिए।

4– अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

## मंगल से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में मंगल कन्या राशि में बैठा हुआ है। आप खर्चीले स्वभाव वाले हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपकी आर्थिक स्थिति पर बुरा असर पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में मंगल चौथे भाव में स्थित है। आपके घर में सुख–शांति की कमी हो सकती है तथा मित्रों और संबंधियों से आपके रिश्ते मुधर नहीं हो सकते हैं।

यदि आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, तो आप मंगल कष्ट निवारक मंत्र का प्रतिदिन 8 बार जप करें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी हो, तो आप रामचरितमानस के सुन्दर काण्ड का पाठ करें।

यदि आपके घर में अशांति हो तो ऊँ हां हां सः खं खः। मंत्र का 108 बार जाप करें। यदि यह पाठ घर के मुखिया या उनकी पत्नी के द्वारा किया जाता है, तो लाभ मिलने की संभावना अधिक हो सकती है।

यदि आपमें उत्साह की कमी या ज्यादा क्रोध अथवा अपने विचारों को व्यक्त ना कर पाने की कमी हो, तो आपको प्रतिदिन 28 बार मंगल गायत्री का जप करना चाहिए।

यदि मंगल दोष के कारण आपको बार––बार या साधारण चोट इत्यादि लगती है, तो आपको मंगल कवच का पाठ करना चाहिए।

यदि मंगल के कुप्रभाव आपकी संतान पर आ रहे हों तथा संतान का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता हो अथवा आपकी बात ना मानते हों, तो आपको मंगल कष्ट निवारक मंत्र का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए।

यदि आप धन हानि, कर्ज में बढ़ोत्तरी आदि से परेशान हैं, तो आपको नियमित रूप से एक साल तक मंगलवार का व्रत करना चाहिए, जिससे मंगल के राशि जनित या भाव जनित दोष दूर हो सकते हैं।

## मंगल ग्रह के साधारण उपाय

आपको रूद्रसूक्त का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। भैरव और हनुमान जी की नियमित पूजा करें। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें। यदि रूद्रसूक्त का जप मुश्किल है, तो आगे लिखे हुए मंत्र का प्रतिदिन 28 बार जप करें।

अघोरेभ्यों अघघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेतु रूद्ररूपेभ्यः।

मित्रों और संबंधियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने से मंगल का अशुभ प्रभाव कम होता है।

## बुध से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में बुध कन्या राशि में स्थित है। आप दूसरों की सहायता करने में आगे रह सकते हैं। आपमें अपनी प्रशंसा सुनने की बुरी आदत होगी। लोग आपकी झूठी प्रशंसा करके अपना काम निकाल सकते हैं। इस वजह से आपको आर्थिक हानि का सामना करना पड़ सकता है।

यदि आपकी वाणी में दोष है, जैसे हकलाना, तुललाना इत्यादि अथवा बुद्धि कमजोर है या अपने जुबान पर नियंत्रण नहीं है, तो आप कार्तिकेय मंत्र का जप पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर दस बार करें। यह जप पुष्य नक्षत्र से शुरू करके अगले 27 दिनों तक करें।

यदि आप अपने विचार प्रकट करने में असमर्थ है या जनसमुदाय इत्यादि के सामने आप नहीं बोल पा रहे हैं, तो आप बुध कवच का नियमित पाठ करें।

यदि आपको तनाव से नींद नहीं आती है या नींद आने पर बुरे सपने दिखाई देते हैं, तो आपको बुध गायत्री मंत्र का दिन में 3 बार जप करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि आपकी त्वचा में कोई विकार है, जैसे छोटे फुंसियों––फोड़े इत्यादि, तो इन विकारों को दूर करने के लिए

शीतला माता के मंत्र का 10 हजार बार जप करें। जप समाप्त होने पर इसी मंत्र से 1000 आहूति दें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आपको व्यापार में सफलता नहीं मिल पाती है, तो बुध गायत्री का 10 हजार जप करें। जप के पश्चात अपने सामर्थ्य के अनुसार मूंग, घी, चाँदी या हाथी दाँत से बनी वस्तु का दान करें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आप किसी असाध्य रोग से पीड़ित है, तो आपको विष्णु सहस्त्र नाम का जप करना चाहिए।

## बुध ग्रह के साधारण उपाय

आपको प्रतिदिन या हर बुधवार के दिन विष्णु सहस्त्र नाम स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नामक द्वादशाक्षरी विष्णु मंत्र का 28 या 108 बार जप करें।

1– बिना अपशब्दों का प्रयोग किए बोलें।
2– अपने से छोटों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
3– किसी कार्य के लिए गलत तरीका ना अपनायें।

## बृहस्पति से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति वृष राशि में स्थित है। आपको अपने जीवनसाथी के कारण परेशानी हो सकती है। और मन उदास रह सकता है। किसी दीर्घकालिक बीमारी के भी शिकार होने की संभावना है।

यदि बृहस्पति की कमजोरी के कारण घर में पैसे की बरकत ना हो, तो गुरु गायत्री मंत्र का दिन में 10 बार पाठ करें।

व्यापार में वृद्धि के लिए आठ गुरु मंत्रों से गंगा जल को अभिमंत्रित करके अपने काम–धंधे की जगह पर छिड़कें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ आपके मतभेद हैं, तो गुरु गायत्री मंत्र का रोज सुबह 10 बार पाठ करें।

यदि आपके बीच कलह की स्थिति है, तो शिव एवं पार्वती की पूजा करें एवं अर्धनारीनटेश्वर स्त्रोत का पाठ सुबह–शाम करें।

यदि लड़की के विवाह में रूकावट आ रही हो या रिश्ता बनते–बनते रह जा रहा हो, तो तीन सौ पार्थिव लिंगों

पर पूजा करने से इस समस्या का निवारण हो सकता है। यदि लड़के के विवाह में ऐसी स्थिति बन रही हो, तो दुर्गा सप्तशती का 17 बार पाठ करें।

## बृहस्पति ग्रह के साधारण उपाय

बृहस्पति जनित दोषों को दूर करने के लिए आपको स्कन्द पुराण में वर्णित बृहस्पति स्त्रोत का पाठ करना चाहिए और पूर्णिमा इत्यादि के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा सुननी चाहिए। बृहस्पति देव को हल्दी से रंगे चावल, पीले फूल, पीले चंदन समर्पित करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन साबुत हल्दी, चने की दाल, नमक आदि का दान करना चाहिए।

1– शिक्षकों, गरुओं, वृद्धों, साधु–संतों और उच्च शिक्षित लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
2– कोर्ट–कचहरी में झूठी गवाही ना दें।

## शुक्र से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में शुक्र कन्या राशि में स्थित है। विपरीत लिंग की व्यक्तियों के साथ आपके नजदीकी संबंध हो सकते हैं, जिससे आपकी बदनामी भी हो सकती है। आप आंख, नाक, कान एवं गले के किसी रोग या दोष से परेशान हो सकती हैं।

आपकी कुण्डली में शुक्र बुध के साथ स्थित है। आप एक समय में एक से अधिक व्यवसाय या काम करने की कोशिश कर सकती हैं, जिससे आपको पर्याप्त सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है।

संतान सुख के लिए कन्याओं को किसी भी प्रकार से ठेस नहीं पहुंचाना चाहिए। नवरात्र के दौरान कन्याओं का पूजन कर अपने सामर्थ्य के अनुसार भोजन एवं वस्त्र उपहार देना चाहिए। साल में किसी अवसर पर किसी व्यक्ति को शिव––पार्वती या विष्णु––लक्ष्मी का फोटो भेंट करना चाहिए या किसी ब्राह्मण को बिछाने योग्य चादर, तकिया या वस्त्रों का जोड़ा दान करना चाहिए। सौन्दर्य लहरी स्त्रोत या देवी सूक्त और श्रीकवच का रोजाना पाठ भी काफी लाभदायक होगा।

यदि शुक्र के दोष के कारण काम––वासना अनियंत्रित हो या अप्राकृतिक वासना के प्रति रूझान हो, तो आपको अथर्ववेद में कहे गये शिव संकल्प का रोजाना सोते समय एक बार पाठ करना चाहिए। आप शुक्र गायत्री का भी

रोजाना 10 बार पाठ कर सकते हैं।

यदि घर में दरिद्रता हो या लक्ष्मी का वास ना हो, तो सुबह में अर्गला एवं कीलक स्त्रोत का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण शरीर में आलस्य हो या अधिक सोने के कारण कार्य अधूरे रह जा रहे हो, तो सुबह एवं रात में सोते समय रात्रिसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण विवाह में बाधा उत्पन्न होती है, या संबंध तय नहीं हो पा रहा है, तो शुक्र स्तवराज का पाठ करना चाहिए।

शुक्र के दोष के कारण यदि बार––बार चोट लगती है, या शरीर में विकार उत्पन्न होता है, तो शुक्र कवच का पाठ करना चाहिए।

## शुक्र ग्रह के साधारण उपाय

रोजाना सुबह स्नान करने के पश्चात तुलसी के पौधे को सींचकर आगे लिखे मंत्र का एक बार पाठ करें। फिर वहीं पर खड़े होकर तुलसी कवच का पाठ करें।

1– अपने जीवनसाथी से ही संबंध रखें।
2– कन्याओं और पराई स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

## शनि से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी जन्मकुण्डली में शनि कर्क राशि में स्थित है। बचपन में किसी बीमारी के कारण आपके शरीर के अंगों में स्थायी दोष रह सकता है। मां–बाप से पर्याप्त प्यार प्राप्त ना होने के कारण आपको भावनात्मक चोट लग सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। आप अपना निवास स्थान या कार्यस्थल कई बार बदल सकते हैं। आपके मुंह में कोई विकार हो सकता है और सहकर्मियों के साथ तालमेल की कमी हो सकती है।

शनि के राशिगत अथवा भावगत दोष के निवारण के लिए शनि गायत्री मंत्र का जप रोजाना आसन पर खड़े होकर एक निश्चित संख्या में करें।

यदि शनि की दशा अथवा गोचर के दौरान किसी तरह के रोग या दुर्घटना की वजह से जीवन पर संकट आए, तो मार्कण्डेय जी द्वारा रचित भगवान शंकर के महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि आपकी संतान आपके बताये रास्ते पर ना चलकर आपकी अवहेलना करती है, तो आपको शनि गायत्री का नियमित 28 या 108 बार जप करना चाहिए। शाम के समय हनुमान जी का ध्यान करते हुए हनुमान जी के भुजंग स्तोत्र या शिवताण्डव स्तोत्र का पाठ करने से आपको लाभ होगा।

शनि के साढ़ेसाती, गोचर काल अथवा शनि की दशा या अन्तर्दशा के अनुसार, यदि कुफल प्राप्त हो रहा हो, तो शनि स्तवराज मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि शनि की दशा या गोचर के दौरान आपको बार––बार चोट लगती हो अथवा कोई रोग आपको परेशान कर रहा हो, तो आपको शनैश्चराष्टक स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

## शनि ग्रह के साधारण उपाय

सोमवार, बुधवार एवं शनिवार को कडुवे तेल का मालिश करके स्नान करें और साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दें। साफ–सुथरा रहने से शनि के सामान्य दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। स्नान के पश्चात रोजाना भगवान शंकर जी, हनुमान जी या भैरव जी की स्तुति करनी चाहिए। टूटे बर्तन या आईना या चारपाई का प्रयोग ना करें।

नौकरों, दासों, मजदूरों व मेहनतकश लोगों का हक ना मारें। उनका व्यर्थ में अपमान ना करें।

## गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।/ढुसार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।

सामान्यतः यह माना जाता है, कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवं आर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिन्तित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना सा डर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय– साढ़े सात साल– ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहन का क्रय, कर्ज से मुक्ति, उंचे तबके के लोगों से संपक्र और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी आदि भी प्राप्त होते हैं।

### प्रथम चक्र

**अष्टम शनि**

**21/12/1984 – 01/06/1985**

**गोचर राशि – वृश्चि.**

**समयावधि :**

**0.0 y.5.0 m.10 d.**

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

**अष्टम शनि**

**17/09/1985 – 17/12/1987**

**गोचर राशि – वृश्चि.**

**समयावधि :**

**2.0 y.3.0 m.0 d.**

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

### द्वितिय चक्र

**प्रथम ढ़ैय्या**

02/06/1995 – 10/08/1995

गोचर राशि – मीन

समयावधि :

**0.0 y.2.0 m.9 d.**

शनि की साढ़ेसाती के पहले चरण में आपके धन, रोग एवं भाग्य भाव पर शनि की दृष्टि होगी। इस दौरान आपको मिला–जुला फल प्राप्त होगा, जिसमें शुभ फल अधिक एवं अशुभ फल कम होंगे। आपको अपने रोजगार या व्यवसाय से आय में कमी होगी एवं बेकार या फालतू के खर्चों में वृद्धि होगी। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आर्थिक कमी के कारण व्यापार में रूकावट के साथ–साथ हानि भी हो सकती है। आप काफी चिन्तित रह सकते हैं और बुरी आदतों या व्यसनों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको इस समय हर तरह के व्यसनों से दूर रहना चाहिए, अन्यथा इनकी तरफ एक बार कदम आगे बढ़ाने के बाद आप इनके शिकार हो सकते हैं और आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, खासकर आपके पैरों में। इसके साथ ही आपको अजीर्ण, गैस, अपच, मानसिक कष्ट एवं दस्त आदि जैसे रोग भी हो सकते हैं। आपको नींद ना आने की बीमारी, रक्तविकार, फेफड़े के रोग एवं चर्मरोग भी हो सकते हैं।

आपके स्वभाव में आलस एवं जिद्दीपन हो सकता है। अपने व्यवसाय में हानि के कारण आपमें क्रोध, अविश्वास, झुंझलाहट एवं कटुता में वृद्धि होगी। आप अपने व्यवसाय से संबंधित लम्बी यात्राएं कर सकते हैं। यात्राओं के दौरान कष्ट एवं हानि की भी संभावना है। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं, तो अपने वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध का सामना कर सकते हैं तथा उनका कोपभाजन बन सकते हैं। आपकी पदोन्नति में रूकावट आ सकती है। अतः अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उत्तम संबंध बनाकर रखें। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य करते हैं, तो अपने साझेदारों पर नजर रखें एवं आंख बंद कर किसी पर विश्वास ना करें। सुखद पहलू यह है, कि इन सबके बावजूद आपको कहीं अचानक आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

इस चरण के दौरान आपके परिवार के अन्य सदस्यों– माता–पिता, नाना–नानी एवं मामा पक्ष को भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अनजाने में आपसे कुछ ऐसा कार्य हो सकता है, जिससे आपको हर समय पुलिस का भय सता सकता है। बेरोजगारी की स्थिति में आप आजीविका के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं एवं वहां उत्पन्न नए समस्याओं के कारण वह स्थान भी जल्द छोड़ने का निश्चय कर सकते हैं। इस दौरान आप कुछ ऐसे लोगों के सम्पक्र में आ सकते हैं, जो गैरकानूनी कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको उनसे दूर रहना चाहिए, अन्यथा आप गहरी समस्या में फँस सकते हैं।

इस चरण की समाप्ति से कुछ समय पहले आपको सम्मान प्राप्त हो सकता है। धीरे–धीरे आपको लाभ प्राप्त होगा एवं अधिकारी वर्ग भी आपके पक्ष में हो जाएंगे। आप व्यवसाय में हों या नौकरी में आपको लाभ प्राप्त होगा। लेकिन ऐसा बहुत कम समय के लिए होगा। आप पुनः आर्थिक एवं शारीरिक समस्याओं में घिर सकते हैं। आप घर की अपेक्षा बारह रहना अधिक पसंद कर सकते हैं। आप निम्न तबके के लोगों के सम्पक्र में आ सकते हैं।

यदि आपकी कुण्डली में शुक्र शनि के प्रभाव में है, तो आपको इस चरण के दौरान पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपको कई स्रोतों से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आप शांतचित्त एवं एकांतप्रेमी हो सकते हैं। आपका मन भौतिक कार्यों के प्रति अधिक रहेगा। लेकिन यदि आपकी कुण्डली में शनि पापी ग्रहों के प्रभाव में है, तो आप गलत कार्यों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको अपने कार्यों से ही अधिक नुकसान होगा। आप पर कोई आपराधिक मामला भी चल सकता है और उसकी वजह से आप अक्सर कोर्ट या थाने का चकक्र लगा सकते हैं। शुभ ग्रह की दशा के दौरान स्थिति कुछ ठीक रहेगी, लेकिन पापी ग्रह की दशा के दौरान आप अपना संतुलन खो सकते हैं। यदि आप अकेले कोई कार्य आरम्भ करें, तो आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आप गुप्त रूप से कुछ धनार्जन भी कर सकते हैं।

**प्रथम ढ़ैय्या**

**16/02/1996 – 17/04/1998**

**गोचर राशि – मीन**

**समयावधि :**

**2.0 y.1.0 m.30 d.**

शनि की साढ़ेसाती के पहले चरण में आपके धन, रोग एवं भाग्य भाव पर शनि की दृष्टि होगी। इस दौरान आपको मिला–जुला फल प्राप्त होगा, जिसमें शुभ फल अधिक एवं अशुभ फल कम होंगे। आपको अपने रोजगार या व्यवसाय से आय में कमी होगी एवं बेकार या फालतू के खर्चों में वृद्धि होगी। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आर्थिक कमी के कारण व्यापार में रूकावट के साथ–साथ हानि भी हो सकती है। आप काफी चिन्तित रह सकते हैं और बुरी आदतों या व्यसनों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको इस समय हर तरह के व्यसनों से दूर रहना चाहिए, अन्यथा इनकी तरफ एक बार कदम आगे बढ़ाने के बाद आप इनके शिकार हो सकते हैं और आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, खासकर आपके पैरों में। इसके साथ ही आपको अजीर्ण, गैस, अपच, मानसिक कष्ट एवं दस्त आदि जैसे रोग भी हो सकते हैं। आपको नींद ना आने की बीमारी, रक्तविकार, फेफड़े के रोग एवं चर्मरोग भी हो सकते हैं।

आपके स्वभाव में आलस एवं जिद्दीपन हो सकता है। अपने व्यवसाय में हानि के कारण आपमें क्रोध, अविश्वास, झुंझलाहट एवं कटुता में वृद्धि होगी। आप अपने व्यवसाय से संबंधित लम्बी यात्राएं कर सकते हैं। यात्राओं के दौरान कष्ट एवं हानि की भी संभावना है। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं, तो अपने वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध का सामना कर सकते हैं तथा उनका कोपभाजन बन सकते हैं। आपकी पदोन्नति में रूकावट आ सकती है। अतः अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उत्तम संबंध बनाकर रखें। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य करते हैं, तो अपने साझेदारों पर नजर रखें एवं आंख बंद कर किसी पर विश्वास ना करें। सुखद पहलू यह है, कि इन सबके बावजूद आपको कहीं अचानक आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

इस चरण के दौरान आपके परिवार के अन्य सदस्यों– माता–पिता, नाना–नानी एवं मामा पक्ष को भी समस्याओं

का सामना करना पड़ सकता है। अनजाने में आपसे कुछ ऐसा कार्य हो सकता है, जिससे आपको हर समय पुलिस का भय सता सकता है। बेरोजगारी की स्थिति में आप आजीविका के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं एवं वहां उत्पन्न नए समस्याओं के कारण वह स्थान भी जल्द छोड़ने का निश्चय कर सकते हैं। इस दौरान आप कुछ ऐसे लोगों के सम्पक्र में आ सकते हैं, जो गैरकानूनी कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको उनसे दूर रहना चाहिए, अन्यथा आप गहरी समस्या में फँस सकते हैं।

इस चरण की समाप्ति से कुछ समय पहले आपको सम्मान प्राप्त हो सकता है। धीरे–धीरे आपको लाभ प्राप्त होगा एवं अधिकारी वर्ग भी आपके पक्ष में हो जाएंगे। आप व्यवसाय में हों या नौकरी में आपको लाभ प्राप्त होगा। लेकिन ऐसा बहुत कम समय के लिए होगा। आप पुनः आर्थिक एवं शारीरिक समस्याओं में घिर सकते हैं। आप घर की अपेक्षा बारह रहना अधिक पसंद कर सकते हैं। आप निम्न तबके के लोगों के सम्पक्र में आ सकते हैं।

यदि आपकी कुण्डली में शुक्र शनि के प्रभाव में है, तो आपको इस चरण के दौरान पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपको कई स्रोतों से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आप शांतचित्त एवं एकांतप्रेमी हो सकते हैं। आपका मन भौतिक कार्यों के प्रति अधिक रहेगा। लेकिन यदि आपकी कुण्डली में शनि पापी ग्रहों के प्रभाव में है, तो आप गलत कार्यों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको अपने कार्यों से ही अधिक नुकसान होगा। आप पर कोई आपराधिक मामला भी चल सकता है और उसकी वजह से आप अक्सर कोर्ट या थाने का चकक्र लगा सकते हैं। शुभ ग्रह की दशा के दौरान स्थिति कुछ ठीक रहेगी, लेकिन पापी ग्रह की दशा के दौरान आप अपना संतुलन खो सकते हैं। यदि आप अकेले कोई कार्य आरम्भ करें, तो आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आप गुप्त रूप से कुछ धनार्जन भी कर सकते हैं।

**द्वितिय ढ़ैय्या**

**17/04/1998 – 07/06/2000**

**गोचर राशि – मेष**

**समयावधि :**

**2.0 y.1.0 m.21 d.**

शनि सा–रु60ये साती के दूसरे चरण के दौरान शनि का अपनी नीच राशि में होने के कारण आपको अपने पराक्रम, दाम्पत्य एवं कर्म क्षेत्रों से संबंधित घातक या अशुभ प्रभाव प्राप्त हो सकता है। आपका पराक्रम क्षीण हो सकता है और आपके गुप्त शत्रु सक्रिय हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचा सकते हैं। जो लोग कभी आपसे भय खाते थे, वे भी आपको क्षति पहुंचा सकते हैं। आप अपनी ही कुछ गलतियों से काफी हानि उठा सकते हैं। हानि होने के बाद आपको अपने किये का पछतावा भी होगा एवं भविष्य में ऐसी गलती ना करने की शपथ भी लेंगे, लेकिन आप पुनः वही गलती दोहराते रहेंगे एवं लोगों के हंसी के पात्र बनेंगे।

आपका स्वभाव धीरे–धीरे बदल सकता है और आप अपने कार्यों को पूरा करने के लिए झूठ का सहारा ले सकते हैं। आपके इस प्रयास में अच्छे कार्य तो खराब होंगे ही साथ में कुछ ऐसे गलत कार्य हो सकते हैं, जो भविष्य में

आपको अधिक हानि पहुंचा सकते हैं। आप शारीरिक रूप से निर्बल, हाथों में कष्ट, फेफड़ों में संक्रमण, खांसी, जुकाम, उदर–विकार एवं यौन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपके दाम्पत्य जीवन में कटुता आ सकती है और अपने जीवनसाथी पर अविश्वास कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से समस्या हो सकती है। आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी छूट सकती है। आप पर विभिन्न प्रकार के दोषारोपण हो सकते हैं।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपको अचानक आर्थिक हानि हो सकती है। आपको अपने सभी प्रयत्नों में विफलता प्राप्त हो सकती है। आपके मन में अपने व्यवसाय के प्रति निराशा हो सकती है। आप इतने निराश हो सकते हैं कि अपना व्यवसाय बंद करने का भी निश्चय कर सकते हैं। व्यापार जगत में आपकी साख खराब हो सकती है और आपके कर्ज में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आर्थिक संकट के इस दौर में आपके मित्रगण भी आपका साथ छोड़ सकते हैं एवं आपके साथ गैरों सा बर्ताव कर सकते हैं। आपके परिवार के लोग भी आप पर विश्वास नहीं करेंगे एवं आपमें ही कमी निकालेंगे। ऐसे में नौकरी या व्यवसाय में आपका मन नहीं लग सकता है। अक्सर कोई शारीरिक कष्ट उभर कर सामने आ सकता है।

आप इतना निराश हो सकते हैं, कि जीवन बोझ लगने लगेगा। आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर हो सकते हैं। आपमें जीवन के प्रति उत्साह में कमी हो सकती है। आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों से जूझते–जूझते आप व्यसन की ओर अग्रसित हो सकते हैं। इस वजह से आप समाज एवं परिवार में अपमानित हो सकते हैं एवं अपना मान–सम्मान खो सकते हैं।

इस चरण के अंतिम समय में स्थिति में कुछ सुधार हो सकते हैं। कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा होने पर अधिक अशुभ नहीं होगा। यदि आपकी आयु 34 से 42 वर्ष के बीच है तथा किसी पापी ग्रह की दशा चल रही है, तो आपको काफी कष्ट हो सकते हैं। आपको भाइयों का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप धर्मादि कार्यों से भी दूर रह सकते हैं। आपकी संगति बुरे लोगों से हो सकती है और आप गलत कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको कारावास का भी भय हो सकता है। चरण के अंतिम चार माह में आपको आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको सम्मान भी मिलेगा और जो लोग आपको गलत समझते थे, उनकी सोच में बदलाव होगा।

**द्वितिय ढ़ैय्या**

**07/06/2000 – 23/07/2002**

**गोचर राशि – वृष**

**समयावधि :**

**2.0 y.1.0 m.15 d.**

शनि सा–रु60ये साती के दूसरे चरण के दौरान शनि का अपनी नीच राशि में होने के कारण आपको अपने पराक्रम, दाम्पत्य एवं कर्म क्षेत्रों से संबंधित घातक या अशुभ प्रभाव प्राप्त हो सकता है। आपका पराक्रम क्षीण हो सकता है और आपके गुप्त शत्रु सक्रिय हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचा सकते हैं। जो लोग कभी आपसे

भय खाते थे, वे भी आपको क्षति पहुंचा सकते हैं। आप अपनी ही कुछ गलतियों से काफी हानि उठा सकते हैं। हानि होने के बाद आपको अपने किये का पछतावा भी होगा एवं भविष्य में ऐसी गलती ना करने की शपथ भी लेंगे, लेकिन आप पुनः वही गलती दोहराते रहेंगे एवं लोगों के हंसी के पात्र बनेंगे।

आपका स्वभाव धीरे–धीरे बदल सकता है और आप अपने कार्यों को पूरा करने के लिए झूठ का सहारा ले सकते हैं। आपके इस प्रयास में अच्छे कार्य तो खराब होंगे ही साथ में कुछ ऐसे गलत कार्य हो सकते हैं, जो भविष्य में आपको अधिक हानि पहुंचा सकते हैं। आप शारीरिक रूप से निर्बल, हाथों में कष्ट, फेफड़ों में संक्रमण, खांसी, जुकाम, उदर–विकार एवं यौन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपके दाम्पत्य जीवन में कटुता आ सकती है और अपने जीवनसाथी पर अविश्वास कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से समस्या हो सकती है। आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी छूट सकती है। आप पर विभिन्न प्रकार के दोषारोपण हो सकते हैं।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपको अचानक आर्थिक हानि हो सकती है। आपको अपने सभी प्रयत्नों में विफलता प्राप्त हो सकती है। आपके मन में अपने व्यवसाय के प्रति निराशा हो सकती है। आप इतने निराश हो सकते हैं कि अपना व्यवसाय बंद करने का भी निश्चय कर सकते हैं। व्यापार जगत में आपकी साख खराब हो सकती है और आपके कर्ज में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आर्थिक संकट के इस दौर में आपके मित्रगण भी आपका साथ छोड़ सकते हैं एवं आपके साथ गैरों सा बर्ताव कर सकते हैं। आपके परिवार के लोग भी आप पर विश्वास नहीं करेंगे एवं आपमें ही कमी निकालेंगे। ऐसे में नौकरी या व्यवसाय में आपका मन नहीं लग सकता है। अक्सर कोई शारीरिक कष्ट उभर कर सामने आ सकता है।

आप इतना निराश हो सकते हैं, कि जीवन बोझ लगने लगेगा। आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर हो सकते हैं। आपमें जीवन के प्रति उत्साह में कमी हो सकती है। आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों से जूझते–जूझते आप व्यसन की ओर अग्रसित हो सकते हैं। इस वजह से आप समाज एवं परिवार में अपमानित हो सकते हैं एवं अपना मान–सम्मान खो सकते हैं।

इस चरण के अंतिम समय में स्थिति में कुछ सुधार हो सकते हैं। कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा होने पर अधिक अशुभ नहीं होगा। यदि आपकी आयु 34 से 42 वर्ष के बीच है तथा किसी पापी ग्रह की दशा चल रही है, तो आपको काफी कष्ट हो सकते हैं। आपको भाइयों का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप धर्मादि कार्यों से भी दूर रह सकते हैं। आपकी संगति बुरे लोगों से हो सकती है और आप गलत कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको कारावास का भी भय हो सकता है। चरण के अंतिम चार माह में आपको आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको सम्मान भी मिलेगा और जो लोग आपको गलत समझते थे, उनकी सोच में बदलाव होगा।

**द्वितिय ढ़ैय्या**

**08/01/2003 – 07/04/2003**

**गोचर राशि – वृष**

**समयावधि :**

**0.0 y.2.0 m.28 d.**

शनि सा–रु60ये साती के दूसरे चरण के दौरान शनि का अपनी नीच राशि में होने के कारण आपको अपने पराक्रम, दाम्पत्य एवं कर्म क्षेत्रों से संबंधित घातक या अशुभ प्रभाव प्राप्त हो सकता है। आपका पराक्रम क्षीण हो सकता है और आपके गुप्त शत्रु सक्रिय हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचा सकते हैं। जो लोग कभी आपसे भय खाते थे, वे भी आपको क्षति पहुंचा सकते हैं। आप अपनी ही कुछ गलतियों से काफी हानि उठा सकते हैं। हानि होने के बाद आपको अपने किये का पछतावा भी होगा एवं भविष्य में ऐसी गलती ना करने की शपथ भी लेंगे, लेकिन आप पुनः वही गलती दोहराते रहेंगे एवं लोगों के हंसी के पात्र बनेंगे।

आपका स्वभाव धीरे–धीरे बदल सकता है और आप अपने कार्यों को पूरा करने के लिए झूठ का सहारा ले सकते हैं। आपके इस प्रयास में अच्छे कार्य तो खराब होंगे ही साथ में कुछ ऐसे गलत कार्य हो सकते हैं, जो भविष्य में आपको अधिक हानि पहुंचा सकते हैं। आप शारीरिक रूप से निर्बल, हाथों में कष्ट, फेफड़ों में संक्रमण, खांसी, जुकाम, उदर–विकार एवं यौन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपके दाम्पत्य जीवन में कटुता आ सकती है और अपने जीवनसाथी पर अविश्वास कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से समस्या हो सकती है। आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी छूट सकती है। आप पर विभिन्न प्रकार के दोषारोपण हो सकते हैं।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपको अचानक आर्थिक हानि हो सकती है। आपको अपने सभी प्रयत्नों में विफलता प्राप्त हो सकती है। आपके मन में अपने व्यवसाय के प्रति निराशा हो सकती है। आप इतने निराश हो सकते हैं कि अपना व्यवसाय बंद करने का भी निश्चय कर सकते हैं। व्यापार जगत में आपकी साख खराब हो सकती है और आपके कर्ज में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आर्थिक संकट के इस दौर में आपके मित्रगण भी आपका साथ छोड़ सकते हैं एवं आपके साथ गैरों सा बर्ताव कर सकते हैं। आपके परिवार के लोग भी आप पर विश्वास नहीं करेंगे एवं आपमें ही कमी निकालेंगे। ऐसे में नौकरी या व्यवसाय में आपका मन नहीं लग सकता है। अक्सर कोई शारीरिक कष्ट उभर कर सामने आ सकता है।

आप इतना निराश हो सकते हैं, कि जीवन बोझ लगने लगेगा। आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर हो सकते हैं। आपमें जीवन के प्रति उत्साह में कमी हो सकती है। आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों से जूझते–जूझते आप व्यसन की ओर अग्रसित हो सकते हैं। इस वजह से आप समाज एवं परिवार में अपमानित हो सकते हैं एवं अपना मान–सम्मान खो सकते हैं।

इस चरण के अंतिम समय में स्थिति में कुछ सुधार हो सकते हैं। कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा होने पर अधिक अशुभ नहीं होगा। यदि आपकी आयु 34 से 42 वर्ष के बीच है तथा किसी पापी ग्रह की दशा चल रही है,

तो आपको काफी कष्ट हो सकते हैं। आपको भाइयों का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप धर्मादि कार्यों से भी दूर रह सकते हैं। आपकी संगति बुरे लोगों से हो सकती है और आप गलत कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको कारावास का भी भय हो सकता है। चरण के अंतिम चार माह में आपको आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको सम्मान भी मिलेगा और जो लोग आपको गलत समझते थे, उनकी सोच में बदलाव होगा।

कंटक शनि

06/09/2004 – 13/01/2005

गोचर राशि – कर्क

समयावधि :

**0.0 y.4.0 m.7 d.**

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

कंटक शनि

26/05/2005 – 01/11/2006

गोचर राशि – कर्क

समयावधि :

**1.0 y.5.0 m.7 d.**

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

कंटक शनि

10/01/2007 – 16/07/2007

गोचर राशि – कर्क

समयावधि :

**0.0 y.6.0 m.5 d.**

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

अष्टम शनि

02/11/2014 – 26/01/2017

गोचर राशि – वृश्चि.

समयावधि :

**2.0 y.2.0 m.24 d.**

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

**अष्टम शनि**

**21/06/2017 – 26/10/2017**

**गोचर राशि – वृश्चि.**

**समयावधि :**

**0.0 y.4.0 m.6 d.**

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

## तृतिय चक्र

**प्रथम ढ़ैय्या**

**29/03/2025 – 03/06/2027**

**गोचर राशि – मीन**

**समयावधि :**

**2.0 y.2.0 m.6 d.**

शनि की साढ़ेसाती के पहले चरण में आपके धन, रोग एवं भाग्य भाव पर शनि की दृष्टि होगी। इस दौरान आपको मिला–जुला फल प्राप्त होगा, जिसमें शुभ फल अधिक एवं अशुभ फल कम होंगे। आपको अपने रोजगार या व्यवसाय से आय में कमी होगी एवं बेकार या फालतू के खर्चों में वृद्धि होगी। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आर्थिक कमी के कारण व्यापार में रूकावट के साथ–साथ हानि भी हो सकती है। आप काफी चिन्तित रह सकते हैं और बुरी आदतों या व्यसनों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको इस समय हर तरह के व्यसनों से दूर रहना चाहिए, अन्यथा इनकी तरफ एक बार कदम आगे बढ़ाने के बाद आप इनके शिकार हो सकते हैं और आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, खासकर आपके पैरों में। इसके साथ ही आपको अजीर्ण, गैस, अपच, मानसिक कष्ट एवं दस्त आदि जैसे रोग भी हो सकते हैं। आपको नींद ना आने की बीमारी, रक्तविकार, फेफड़े के रोग एवं चर्मरोग भी हो सकते हैं।

आपके स्वभाव में आलस एवं जिद्दीपन हो सकता है। अपने व्यवसाय में हानि के कारण आपमें क्रोध, अविश्वास, झुंझलाहट एवं कटुता में वृद्धि होगी। आप अपने व्यवसाय से संबंधित लम्बी यात्राएं कर सकते हैं। यात्राओं के दौरान कष्ट एवं हानि की भी संभावना है। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं, तो अपने वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध का सामना कर सकते हैं तथा उनका कोपभाजन बन सकते हैं। आपकी पदोन्नति में रूकावट आ सकती है। अतः अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उत्तम संबंध बनाकर रखें। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य करते हैं, तो अपने साझेदारों पर नजर रखें एवं आंख बंद कर किसी पर विश्वास ना करें। सुखद पहलू यह है, कि इन

सबके बावजूद आपको कहीं अचानक आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

इस चरण के दौरान आपके परिवार के अन्य सदस्यों– माता–पिता, नाना–नानी एवं मामा पक्ष को भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अनजाने में आपसे कुछ ऐसा कार्य हो सकता है, जिससे आपको हर समय पुलिस का भय सता सकता है। बेरोजगारी की स्थिति में आप आजीविका के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं एवं वहां उत्पन्न नए समस्याओं के कारण वह स्थान भी जल्द छोड़ने का निश्चय कर सकते हैं। इस दौरान आप कुछ ऐसे लोगों के सम्पक्र में आ सकते हैं, जो गैरकानूनी कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको उनसे दूर रहना चाहिए, अन्यथा आप गहरी समस्या में फँस सकते हैं।

इस चरण की समाप्ति से कुछ समय पहले आपको सम्मान प्राप्त हो सकता है। धीरे–धीरे आपको लाभ प्राप्त होगा एवं अधिकारी वर्ग भी आपके पक्ष में हो जाएंगे। आप व्यवसाय में हों या नौकरी में आपको लाभ प्राप्त होगा। लेकिन ऐसा बहुत कम समय के लिए होगा। आप पुनः आर्थिक एवं शारीरिक समस्याओं में घिर सकते हैं। आप घर की अपेक्षा बारह रहना अधिक पसंद कर सकते हैं। आप निम्न तबके के लोगों के सम्पक्र में आ सकते हैं।

यदि आपकी कुण्डली में शुक्र शनि के प्रभाव में है, तो आपको इस चरण के दौरान पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपको कई स्रोतों से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आप शांतचित्त एवं एकांतप्रेमी हो सकते हैं। आपका मन भौतिक कार्यों के प्रति अधिक रहेगा। लेकिन यदि आपकी कुण्डली में शनि पापी ग्रहों के प्रभाव में है, तो आप गलत कार्यों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको अपने कार्यों से ही अधिक नुकसान होगा। आप पर कोई आपराधिक मामला भी चल सकता है और उसकी वजह से आप अक्सर कोर्ट या थाने का चकक्र लगा सकते हैं। शुभ ग्रह की दशा के दौरान स्थिति कुछ ठीक रहेगी, लेकिन पापी ग्रह की दशा के दौरान आप अपना संतुलन खो सकते हैं। यदि आप अकेले कोई कार्य आरम्भ करें, तो आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आप गुप्त रूप से कुछ धनार्जन भी कर सकते हैं।

**प्रथम ढ़ैय्या**

**20/10/2027 – 23/02/2028**

**गोचर राशि – मीन**

**समयावधि :**

**0.0 y.4.0 m.5 d.**

शनि की साढ़ेसाती के पहले चरण में आपके धन, रोग एवं भाग्य भाव पर शनि की दृष्टि होगी। इस दौरान आपको मिला–जुला फल प्राप्त होगा, जिसमें शुभ फल अधिक एवं अशुभ फल कम होंगे। आपको अपने रोजगार या व्यवसाय से आय में कमी होगी एवं बेकार या फालतू के खर्चों में वृद्धि होगी। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आर्थिक कमी के कारण व्यापार में रूकावट के साथ–साथ हानि भी हो सकती है। आप काफी चिन्तित रह सकते हैं और बुरी आदतों या व्यसनों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको इस समय हर तरह के व्यसनों से दूर रहना चाहिए, अन्यथा इनकी तरफ एक बार कदम आगे बढ़ाने के बाद आप इनके शिकार हो सकते हैं और

आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, खासकर आपके पैरों में। इसके साथ ही आपको अजीर्ण, गैस, अपच, मानसिक कष्ट एवं दस्त आदि जैसे रोग भी हो सकते हैं। आपको नींद ना आने की बीमारी, रक्तविकार, फेफड़े के रोग एवं चर्मरोग भी हो सकते हैं।

आपके स्वभाव में आलस एवं जिद्दीपन हो सकता है। अपने व्यवसाय में हानि के कारण आपमें क्रोध, अविश्वास, झुंझलाहट एवं कटुता में वृद्धि होगी। आप अपने व्यवसाय से संबंधित लम्बी यात्राएं कर सकते हैं। यात्राओं के दौरान कष्ट एवं हानि की भी संभावना है। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं, तो अपने वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध का सामना कर सकते हैं तथा उनका कोपभाजन बन सकते हैं। आपकी पदोन्नति में रूकावट आ सकती है। अतः अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उत्तम संबंध बनाकर रखें। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य करते हैं, तो अपने साझेदारों पर नजर रखें एवं आंख बंद कर किसी पर विश्वास ना करें। सुखद पहलू यह है, कि इन सबके बावजूद आपको कहीं अचानक आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

इस चरण के दौरान आपके परिवार के अन्य सदस्यों– माता–पिता, नाना–नानी एवं मामा पक्ष को भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अनजाने में आपसे कुछ ऐसा कार्य हो सकता है, जिससे आपको हर समय पुलिस का भय सता सकता है। बेरोजगारी की स्थिति में आप आजीविका के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं एवं वहां उत्पन्न नए समस्याओं के कारण वह स्थान भी जल्द छोड़ने का निश्चय कर सकते हैं। इस दौरान आप कुछ ऐसे लोगों के सम्पक्र में आ सकते हैं, जो गैरकानूनी कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको उनसे दूर रहना चाहिए, अन्यथा आप गहरी समस्या में फँस सकते हैं।

इस चरण की समाप्ति से कुछ समय पहले आपको सम्मान प्राप्त हो सकता है। धीरे–धीरे आपको लाभ प्राप्त होगा एवं अधिकारी वर्ग भी आपके पक्ष में हो जाएंगे। आप व्यवसाय में हों या नौकरी में आपको लाभ प्राप्त होगा। लेकिन ऐसा बहुत कम समय के लिए होगा। आप पुनः आर्थिक एवं शारीरिक समस्याओं में घिर सकते हैं। आप घर की अपेक्षा बारह रहना अधिक पसंद कर सकते हैं। आप निम्न तबके के लोगों के सम्पक्र में आ सकते हैं।

यदि आपकी कुण्डली में शुक्र शनि के प्रभाव में है, तो आपको इस चरण के दौरान पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपको कई स्रोतों से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आप शांतचित्त एवं एकांतप्रेमी हो सकते हैं। आपका मन भौतिक कार्यों के प्रति अधिक रहेगा। लेकिन यदि आपकी कुण्डली में शनि पापी ग्रहों के प्रभाव में है, तो आप गलत कार्यों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको अपने कार्यों से ही अधिक नुकसान होगा। आप पर कोई आपराधिक मामला भी चल सकता है और उसकी वजह से आप अक्सर कोर्ट या थाने का चकक्र लगा सकते हैं। शुभ ग्रह की दशा के दौरान स्थिति कुछ ठीक रहेगी, लेकिन पापी ग्रह की दशा के दौरान आप अपना संतुलन खो सकते हैं। यदि आप अकेले कोई कार्य आरम्भ करें, तो आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आप गुप्त रूप से कुछ धनार्जन भी कर सकते हैं।

### द्वितिय ढ़ैय्या

03/06/2027 – 20/10/2027

गोचर राशि – मेष

समयावधि :

**0.0 y.4.0 m.18 d.**

शनि सा–रु60ये साती के दूसरे चरण के दौरान शनि का अपनी नीच राशि में होने के कारण आपको अपने पराक्रम, दाम्पत्य एवं कर्म क्षेत्रों से संबंधित घातक या अशुभ प्रभाव प्राप्त हो सकता है। आपका पराक्रम क्षीण हो सकता है और आपके गुप्त शत्रु सक्रिय हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचा सकते हैं। जो लोग कभी आपसे भय खाते थे, वे भी आपको क्षति पहुंचा सकते हैं। आप अपनी ही कुछ गलतियों से काफी हानि उठा सकते हैं। हानि होने के बाद आपको अपने किये का पछतावा भी होगा एवं भविष्य में ऐसी गलती ना करने की शपथ भी लेंगे, लेकिन आप पुनः वही गलती दोहराते रहेंगे एवं लोगों के हंसी के पात्र बनेंगे।

आपका स्वभाव धीरे–धीरे बदल सकता है और आप अपने कार्यों को पूरा करने के लिए झूठ का सहारा ले सकते हैं। आपके इस प्रयास में अच्छे कार्य तो खराब होंगे ही साथ में कुछ ऐसे गलत कार्य हो सकते हैं, जो भविष्य में आपको अधिक हानि पहुंचा सकते हैं। आप शारीरिक रूप से निर्बल, हाथों में कष्ट, फेफड़ों में संक्रमण, खांसी, जुकाम, उदर–विकार एवं यौन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपके दाम्पत्य जीवन में कटुता आ सकती है और अपने जीवनसाथी पर अविश्वास कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से समस्या हो सकती है। आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी छूट सकती है। आप पर विभिन्न प्रकार के दोषारोपण हो सकते हैं।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपको अचानक आर्थिक हानि हो सकती है। आपको अपने सभी प्रयत्नों में विफलता प्राप्त हो सकती है। आपके मन में अपने व्यवसाय के प्रति निराशा हो सकती है। आप इतने निराश हो सकते हैं कि अपना व्यवसाय बंद करने का भी निश्चय कर सकते हैं। व्यापार जगत में आपकी साख खराब हो सकती है और आपके कर्ज में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आर्थिक संकट के इस दौर में आपके मित्रगण भी आपका साथ छोड़ सकते हैं एवं आपके साथ गैरों सा बर्ताव कर सकते हैं। आपके परिवार के लोग भी आप पर विश्वास नहीं करेंगे एवं आपमें ही कमी निकालेंगे। ऐसे में नौकरी या व्यवसाय में आपका मन नहीं लग सकता है। अक्सर कोई शारीरिक कष्ट उभर कर सामने आ सकता है।

आप इतना निराश हो सकते हैं, कि जीवन बोझ लगने लगेगा। आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर हो सकते हैं। आपमें जीवन के प्रति उत्साह में कमी हो सकती है। आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों से जूझते–जूझते आप व्यसन की ओर अग्रसित हो सकते हैं। इस वजह से आप समाज एवं परिवार में अपमानित हो सकते हैं एवं अपना मान–सम्मान खो सकते हैं।

इस चरण के अंतिम समय में स्थिति में कुछ सुधार हो सकते हैं। कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा होने पर

अधिक अशुभ नहीं होगा। यदि आपकी आयु 34 से 42 वर्ष के बीच है तथा किसी पापी ग्रह की दशा चल रही है, तो आपको काफी कष्ट हो सकते हैं। आपको भाइयों का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप धर्मादि कार्यों से भी दूर रह सकते हैं। आपकी संगति बुरे लोगों से हो सकती है और आप गलत कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको कारावास का भी भय हो सकता है। चरण के अंतिम चार माह में आपको आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको सम्मान भी मिलेगा और जो लोग आपको गलत समझते थे, उनकी सोच में बदलाव होगा।

**द्वितिय ढ़ैय्या**

**23/02/2028 – 08/08/2029**

**गोचर राशि – मेष**

**समयावधि :**

**1.0 y.5.0 m.14 d.**

शनि सा–रु60ये साती के दूसरे चरण के दौरान शनि का अपनी नीच राशि में होने के कारण आपको अपने पराक्रम, दाम्पत्य एवं कर्म क्षेत्रों से संबंधित घातक या अशुभ प्रभाव प्राप्त हो सकता है। आपका पराक्रम क्षीण हो सकता है और आपके गुप्त शत्रु सक्रिय हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचा सकते हैं। जो लोग कभी आपसे भय खाते थे, वे भी आपको क्षति पहुंचा सकते हैं। आप अपनी ही कुछ गलतियों से काफी हानि उठा सकते हैं। हानि होने के बाद आपको अपने किये का पछतावा भी होगा एवं भविष्य में ऐसी गलती ना करने की शपथ भी लेंगे, लेकिन आप पुनः वही गलती दोहराते रहेंगे एवं लोगों के हंसी के पात्र बनेंगे।

आपका स्वभाव धीरे–धीरे बदल सकता है और आप अपने कार्यों को पूरा करने के लिए झूठ का सहारा ले सकते हैं। आपके इस प्रयास में अच्छे कार्य तो खराब होंगे ही साथ में कुछ ऐसे गलत कार्य हो सकते हैं, जो भविष्य में आपको अधिक हानि पहुंचा सकते हैं। आप शारीरिक रूप से निर्बल, हाथों में कष्ट, फेफड़ों में संक्रमण, खांसी, जुकाम, उदर–विकार एवं यौन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपके दाम्पत्य जीवन में कटुता आ सकती है और अपने जीवनसाथी पर अविश्वास कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से समस्या हो सकती है। आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी छूट सकती है। आप पर विभिन्न प्रकार के दोषारोपण हो सकते हैं।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपको अचानक आर्थिक हानि हो सकती है। आपको अपने सभी प्रयत्नों में विफलता प्राप्त हो सकती है। आपके मन में अपने व्यवसाय के प्रति निराशा हो सकती है। आप इतने निराश हो सकते हैं कि अपना व्यवसाय बंद करने का भी निश्चय कर सकते हैं। व्यापार जगत में आपकी साख खराब हो सकती है और आपके कर्ज में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आर्थिक संकट के इस दौर में आपके मित्रगण भी आपका साथ छोड़ सकते हैं एवं आपके साथ गैरों सा बर्ताव कर सकते हैं। आपके परिवार के लोग भी आप पर विश्वास नहीं करेंगे एवं आपमें ही कमी निकालेंगे। ऐसे में नौकरी या व्यवसाय में आपका मन नहीं लग सकता है। अक्सर कोई शारीरिक कष्ट उभर कर सामने आ सकता है।

आप इतना निराश हो सकते हैं, कि जीवन बोझ लगने लगेगा। आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर हो सकते हैं। आपमें जीवन के प्रति उत्साह में कमी हो सकती है। आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों से जूझते–जूझते आप व्यसन की ओर अग्रसित हो सकते हैं। इस वजह से आप समाज एवं परिवार में अपमानित हो सकते हैं एवं अपना मान–सम्मान खो सकते हैं।

इस चरण के अंतिम समय में स्थिति में कुछ सुधार हो सकते हैं। कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा होने पर अधिक अशुभ नहीं होगा। यदि आपकी आयु 34 से 42 वर्ष के बीच है तथा किसी पापी ग्रह की दशा चल रही है, तो आपको काफी कष्ट हो सकते हैं। आपको भाइयों का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप धर्मादि कार्यों से भी दूर रह सकते हैं। आपकी संगति बुरे लोगों से हो सकती है और आप गलत कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको कारावास का भी भय हो सकता है। चरण के अंतिम चार माह में आपको आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको सम्मान भी मिलेगा और जो लोग आपको गलत समझते थे, उनकी सोच में बदलाव होगा।

**द्वितिय ढ़ैय्या**

**05/10/2029 – 17/04/2030**

**गोचर राशि – मेष**

**समयावधि :**

**0.0 y.6.0 m.12 d.**

शनि सा–रु60ये साती के दूसरे चरण के दौरान शनि का अपनी नीच राशि में होने के कारण आपको अपने पराक्रम, दाम्पत्य एवं कर्म क्षेत्रों से संबंधित घातक या अशुभ प्रभाव प्राप्त हो सकता है। आपका पराक्रम क्षीण हो सकता है और आपके गुप्त शत्रु सक्रिय हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचा सकते हैं। जो लोग कभी आपसे भय खाते थे, वे भी आपको क्षति पहुंचा सकते हैं। आप अपनी ही कुछ गलतियों से काफी हानि उठा सकते हैं। हानि होने के बाद आपको अपने किये का पछतावा भी होगा एवं भविष्य में ऐसी गलती ना करने की शपथ भी लेंगे, लेकिन आप पुनः वही गलती दोहराते रहेंगे एवं लोगों के हंसी के पात्र बनेंगे।

आपका स्वभाव धीरे–धीरे बदल सकता है और आप अपने कार्यों को पूरा करने के लिए झूठ का सहारा ले सकते हैं। आपके इस प्रयास में अच्छे कार्य तो खराब होंगे ही साथ में कुछ ऐसे गलत कार्य हो सकते हैं, जो भविष्य में आपको अधिक हानि पहुंचा सकते हैं। आप शारीरिक रूप से निर्बल, हाथों में कष्ट, फेफड़ों में संक्रमण, खांसी, जुकाम, उदर–विकार एवं यौन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपके दाम्पत्य जीवन में कटुता आ सकती है और अपने जीवनसाथी पर अविश्वास कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से समस्या हो सकती है। आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी छूट सकती है। आप पर विभिन्न प्रकार के दोषारोपण हो सकते हैं।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपको अचानक आर्थिक हानि हो सकती है। आपको अपने सभी प्रयत्नों में विफलता प्राप्त हो सकती है। आपके मन में अपने व्यवसाय के प्रति निराशा हो सकती है। आप इतने निराश हो

सकते हैं कि अपना व्यवसाय बंद करने का भी निश्चय कर सकते हैं। व्यापार जगत में आपकी साख खराब हो सकती है और आपके कर्ज में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आर्थिक संकट के इस दौर में आपके मित्रगण भी आपका साथ छोड़ सकते हैं एवं आपके साथ गैरों सा बर्ताव कर सकते हैं। आपके परिवार के लोग भी आप पर विश्वास नहीं करेंगे एवं आपमें ही कमी निकालेंगे। ऐसे में नौकरी या व्यवसाय में आपका मन नहीं लग सकता है। अक्सर कोई शारीरिक कष्ट उभर कर सामने आ सकता है।

आप इतना निराश हो सकते हैं, कि जीवन बोझ लगने लगेगा। आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर हो सकते हैं। आपमें जीवन के प्रति उत्साह में कमी हो सकती है। आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों से जूझते–जूझते आप व्यसन की ओर अग्रसित हो सकते हैं। इस वजह से आप समाज एवं परिवार में अपमानित हो सकते हैं एवं अपना मान–सम्मान खो सकते हैं।

इस चरण के अंतिम समय में स्थिति में कुछ सुधार हो सकते हैं। कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा होने पर अधिक अशुभ नहीं होगा। यदि आपकी आयु 34 से 42 वर्ष के बीच है तथा किसी पापी ग्रह की दशा चल रही है, तो आपको काफी कष्ट हो सकते हैं। आपको भाइयों का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप धर्मादि कार्यों से भी दूर रह सकते हैं। आपकी संगति बुरे लोगों से हो सकती है और आप गलत कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको कारावास का भी भय हो सकता है। चरण के अंतिम चार माह में आपको आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको सम्मान भी मिलेगा और जो लोग आपको गलत समझते थे, उनकी सोच में बदलाव होगा।

**द्वितिय ढ़ैय्या**

**08/08/2029 – 05/10/2029**

**गोचर राशि – वृष**

**समयावधि :**

**0.0 y.1.0 m.28 d.**

शनि सा–रु60ये साती के दूसरे चरण के दौरान शनि का अपनी नीच राशि में होने के कारण आपको अपने पराक्रम, दाम्पत्य एवं कर्म क्षेत्रों से संबंधित घातक या अशुभ प्रभाव प्राप्त हो सकता है। आपका पराक्रम क्षीण हो सकता है और आपके गुप्त शत्रु सक्रिय हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचा सकते हैं। जो लोग कभी आपसे भय खाते थे, वे भी आपको क्षति पहुंचा सकते हैं। आप अपनी ही कुछ गलतियों से काफी हानि उठा सकते हैं। हानि होने के बाद आपको अपने किये का पछतावा भी होगा एवं भविष्य में ऐसी गलती ना करने की शपथ भी लेंगे, लेकिन आप पुनः वही गलती दोहराते रहेंगे एवं लोगों के हंसी के पात्र बनेंगे।

आपका स्वभाव धीरे–धीरे बदल सकता है और आप अपने कार्यों को पूरा करने के लिए झूठ का सहारा ले सकते हैं। आपके इस प्रयास में अच्छे कार्य तो खराब होंगे ही साथ में कुछ ऐसे गलत कार्य हो सकते हैं, जो भविष्य में आपको अधिक हानि पहुंचा सकते हैं। आप शारीरिक रूप से निर्बल, हाथों में कष्ट, फेफड़ों में संक्रमण, खांसी, जुकाम, उदर–विकार एवं यौन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपके दाम्पत्य जीवन में कटुता आ सकती है और

अपने जीवनसाथी पर अविश्वास कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से समस्या हो सकती है। आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी छूट सकती है। आप पर विभिन्न प्रकार के दोषारोपण हो सकते हैं।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपको अचानक आर्थिक हानि हो सकती है। आपको अपने सभी प्रयत्नों में विफलता प्राप्त हो सकती है। आपके मन में अपने व्यवसाय के प्रति निराशा हो सकती है। आप इतने निराश हो सकते हैं कि अपना व्यवसाय बंद करने का भी निश्चय कर सकते हैं। व्यापार जगत में आपकी साख खराब हो सकती है और आपके कर्ज में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आर्थिक संकट के इस दौर में आपके मित्रगण भी आपका साथ छोड़ सकते हैं एवं आपके साथ गैरों सा बर्ताव कर सकते हैं। आपके परिवार के लोग भी आप पर विश्वास नहीं करेंगे एवं आपमें ही कमी निकालेंगे। ऐसे में नौकरी या व्यवसाय में आपका मन नहीं लग सकता है। अक्सर कोई शारीरिक कष्ट उभर कर सामने आ सकता है।

आप इतना निराश हो सकते हैं, कि जीवन बोझ लगने लगेगा। आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर हो सकते हैं। आपमें जीवन के प्रति उत्साह में कमी हो सकती है। आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों से जूझते–जूझते आप व्यसन की ओर अग्रसित हो सकते हैं। इस वजह से आप समाज एवं परिवार में अपमानित हो सकते हैं एवं अपना मान–सम्मान खो सकते हैं।

इस चरण के अंतिम समय में स्थिति में कुछ सुधार हो सकते हैं। कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा होने पर अधिक अशुभ नहीं होगा। यदि आपकी आयु 34 से 42 वर्ष के बीच है तथा किसी पापी ग्रह की दशा चल रही है, तो आपको काफी कष्ट हो सकते हैं। आपको भाइयों का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप धर्मादि कार्यों से भी दूर रह सकते हैं। आपकी संगति बुरे लोगों से हो सकती है और आप गलत कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको कारावास का भी भय हो सकता है। चरण के अंतिम चार माह में आपको आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको सम्मान भी मिलेगा और जो लोग आपको गलत समझते थे, उनकी सोच में बदलाव होगा।

**द्वितिय ढ़ैय्या**

**17/04/2030 – 31/05/2032**

**गोचर राशि – वृष**

**समयावधि :**

**2.0 y.1.0 m.14 d.**

शनि सा–रु60ये साती के दूसरे चरण के दौरान शनि का अपनी नीच राशि में होने के कारण आपको अपने पराक्रम, दाम्पत्य एवं कर्म क्षेत्रों से संबंधित घातक या अशुभ प्रभाव प्राप्त हो सकता है। आपका पराक्रम क्षीण हो सकता है और आपके गुप्त शत्रु सक्रिय हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचा सकते हैं। जो लोग कभी आपसे भय खाते थे, वे भी आपको क्षति पहुंचा सकते हैं। आप अपनी ही कुछ गलतियों से काफी हानि उठा सकते हैं। हानि होने के बाद आपको अपने किये का पछतावा भी होगा एवं भविष्य में ऐसी गलती ना करने की शपथ भी

लेंगे, लेकिन आप पुनः वही गलती दोहराते रहेंगे एवं लोगों के हंसी के पात्र बनेंगे।

आपका स्वभाव धीरे–धीरे बदल सकता है और आप अपने कार्यों को पूरा करने के लिए झूठ का सहारा ले सकते हैं। आपके इस प्रयास में अच्छे कार्य तो खराब होंगे ही साथ में कुछ ऐसे गलत कार्य हो सकते हैं, जो भविष्य में आपको अधिक हानि पहुंचा सकते हैं। आप शारीरिक रूप से निर्बल, हाथों में कष्ट, फेफड़ों में संक्रमण, खांसी, जुकाम, उदर–विकार एवं यौन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपके दाम्पत्य जीवन में कटुता आ सकती है और अपने जीवनसाथी पर अविश्वास कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से समस्या हो सकती है। आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी छूट सकती है। आप पर विभिन्न प्रकार के दोषारोपण हो सकते हैं।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपको अचानक आर्थिक हानि हो सकती है। आपको अपने सभी प्रयत्नों में विफलता प्राप्त हो सकती है। आपके मन में अपने व्यवसाय के प्रति निराशा हो सकती है। आप इतने निराश हो सकते हैं कि अपना व्यवसाय बंद करने का भी निश्चय कर सकते हैं। व्यापार जगत में आपकी साख खराब हो सकती है और आपके कर्ज में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आर्थिक संकट के इस दौर में आपके मित्रगण भी आपका साथ छोड़ सकते हैं एवं आपके साथ गैरों सा बर्ताव कर सकते हैं। आपके परिवार के लोग भी आप पर विश्वास नहीं करेंगे एवं आपमें ही कमी निकालेंगे। ऐसे में नौकरी या व्यवसाय में आपका मन नहीं लग सकता है। अक्सर कोई शारीरिक कष्ट उभर कर सामने आ सकता है।

आप इतना निराश हो सकते हैं, कि जीवन बोझ लगने लगेगा। आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर हो सकते हैं। आपमें जीवन के प्रति उत्साह में कमी हो सकती है। आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों से जूझते–जूझते आप व्यसन की ओर अग्रसित हो सकते हैं। इस वजह से आप समाज एवं परिवार में अपमानित हो सकते हैं एवं अपना मान–सम्मान खो सकते हैं।

इस चरण के अंतिम समय में स्थिति में कुछ सुधार हो सकते हैं। कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा होने पर अधिक अशुभ नहीं होगा। यदि आपकी आयु 34 से 42 वर्ष के बीच है तथा किसी पापी ग्रह की दशा चल रही है, तो आपको काफी कष्ट हो सकते हैं। आपको भाइयों का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप धर्मादि कार्यों से भी दूर रह सकते हैं। आपकी संगति बुरे लोगों से हो सकती है और आप गलत कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको कारावास का भी भय हो सकता है। चरण के अंतिम चार माह में आपको आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको सम्मान भी मिलेगा और जो लोग आपको गलत समझते थे, उनकी सोच में बदलाव होगा।

**कंटक शनि**

**13/07/2034 – 27/08/2036**

**गोचर राशि – कर्क**

**समयावधि :**

**2.0 y.1.0 m.15 d.**

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

**अष्टम शनि**

**11/12/2043 – 23/06/2044**

**गोचर राशि – वृश्चि.**

**समयावधि :**

**0.0 y.6.0 m.12 d.**

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

**अष्टम शनि**

**30/08/2044 – 08/12/2046**

**गोचर राशि – वृश्चि.**

**समयावधि :**

**2.0 y.3.0 m.9 d.**

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

**शनि की सा–साढ़ेसाती या –ढ़ैय्या के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए नीचे लिखे उपायों को करें–**

**मंत्र–**

1– महामृत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप (रोज 10 माल, 125 दिन) करें।

ऊँ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

2– शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जाप करें–

ऊँ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः। ऊँ शं शनैश्चराय नमः।।

3– पौराणिक शनि मंत्र–

ऊँ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

**स्तोत्र**

नीचे लिखे शनि स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।
तानि शनि–नामामि जपेदश्वत्थसन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचिद् भविष्यति।।
साढ़ेसाती पीड़ानाशक स्तोत्र– पिप्पलाद के अनुसार–
नमस्ते कोणसंस्थय पिंङ्गलाय नमोस्तुते।
नमस्ते बभ्रु रूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तु ते।प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

**रत्न –**

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव के तली की कील का छल्ला बनाकर मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

**व्रत –**

शनि वार का व्रत रखना चाहिए एवं शनि देव की पूजा करनी चाहिए। शनिवार व्रतकथा पढ़ने से भी लाभ प्राप्त होता है। व्रत के दौरान दिन में फलाहार करें, एवं सायंकाल हनुमान जी या भौरव जी का दर्शन करना चाहिए। रात्रि में काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला सकते हैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण कर सकते हैं।

**दान –**

शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए उड़द, तेल, नीलम, तिल, भैंस, लोहा एवं काला कपड़ा दान करना चाहिए।

**औषधि –**

हर शनिवार को सुरमा, काले तिल, सौंफ और नागरमोथा मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए।

राशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती एवं –ढ़ैय्या के सामान्य उपाय–

1– साढ़े साती के आरम्भ में ही काले घोड़े की नाल का छल्ला धारण करें।

2– प्रातः उठते ही सबसे पहले द्वादश ज्योर्तिलिंग (मल्लिकार्जुन, नागेश्वर, काशी विश्वनाथ, महाकालेश्वर, त्रयम्बकेश्वर, घुश्मेश्वर, ओंकारेश्वर, ममलेश्वर, भीमाशंकर, केदारनाथ, बैद्यनाथेश्वर, सोमनाथेश्वर) का पाठ करें। तत्पश्चात शनि देव के दस नाम (शनि, सौरि, पंगु, यम, कृष्णयम, असित, अक्रिमन्द, छायसुनु, रविज, छायात्मज) का पाठ करें।

3– नियमित रूप से हनुमान जी की उपासना के साथ शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ करें एवं एक माला ''ओम् हं हनुमंते रूद्रात्मकाये हूं फट्'' का जाप करें।

4– शनिदेव का व्रत रखें। शाम को काली उड़द की खिचड़ी से व्रत खोलें तथा शनिदेव के नाम पर छायादान करें।

5– प्रथम चरण में केले के वृक्ष में गुरूवार को सामान्य जल एवं शुद्ध घी का दीपक अर्पित करें। गाय को भोग में दो आटे के पेड़े, गुड़ एवं गीली चने की दाल दें।

6– रात्रि में सूरमा लगायें। भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग करें।

7– साढ़े साती के नेष्टफल की शांति के लिए शनि के बीज मंत्र या वैदिक मंत्र का 23,000 बार विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरांत दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करें। इसके अलावा, शुभ बेला में नीलम रत्न एवं शनि यंत्र धारण करना भी फायदेमंद होगा। लेकिन, रत्न धारण करने से पहले किसी दैवज्ञ या आचार्य या किसी व्यवसायिक ज्योतिषी से सलाह अवश्य लें।

## शनि की साढ़ेसाती एवं –ढ़ैय्या के विशेष उपाय –

यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ है, तो भैरोंजी एवं शनिदेव की पूजा–अर्चना कर शनि को और बल देकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि शनि अशुभ या दूषित है, तो शनि के उपाय कर अशुभ फल को खत्म एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि आपकी कुण्डली में साढ़ेसाती चल रही है या आप शनिकृत कष्ट भोग रहें हैं, तो नीचे लिखे उपायों को करने से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

1– शनि का छाया दान करें एवं नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

2– शनिवार को काली गाय की सेवा करें। तिलक–बिन्दी कर उसके सींग पर कलावा बांध कर बूंदी के आठ लड्डू खिलायें एवं चरण स्पर्श करें।

3– काले कुत्ते को नियमित रूप से मीठी रोटी खिलायें।

4– यदि आपकी कुण्डली में शनि लग्न में बैठा है, तो जमीन में सुरमा गाड़ें।

5– शनिवार का व्रत रखें तथा पीपल की सेवा करें एवं मीठा जल अर्पित करें।

6– मद्यपान ना करें।

7– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष पर हनुमान जी का स्मरण कर तिल के तेल के दीपक में सिंदूर डालकर लाल पुष्प अर्पित करें।

8– भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग अवश्य करें।

9– शनिवार को काले घोड़े के पैर की मिट्टी काले कपड़े में बांधकर ताबीज के रूप में धारण करें।

10– शनिवार को आप एक माप की आठ बोतलें लें, और हर बोतल में एक ही माप का सरसों तेल भरें। प्रत्येक में आठ साबुत उड़द के दाने एवं एक कील डालें। फिर आठों बोतलों को अपने उपर से आठ बार उसार कर बहते जल में प्रवाहित करें। यह क्रिया लगातार आठ शनिवार करें।

11– नियमित रूप से शनि चालीसा एवं उनके 108 नामों का उच्चारण करें।

12– प्रातः उठते ही बासी मुख से शनिदेव के दस नामों का उच्चारण तथा द्वाद्वशज्योतिर्लिंग के नामों का उच्चारण करें।

13– प्रत्येक शनिवार को काले कुत्ते को रोटी पर सरसों का तेल चुपड़ कर गुड़ रख कर खिलायें एवं बन्दरों को चने खिलायें।

14– शुक्रवार को लोहे के बर्तन में आठ किलो चने भिगों दें। शनिवार को काले कपड़े में सारे चने रखें। साथ में 800 ग्राम काली उड़द और इतने ही काले तिल के साथ इतने ही जौ एवं एक लोहे की पत्ती रखें। इसकी पोटली बनाकर ऐसे स्थान पर डालें जहां मछलियां हों। यह क्रिया लगातार आठ माह करें। शुरू में आठ माह करें, इसके बाद वर्ष में सिर्फ एक बार पर्याप्त होगा।

15– अंधेरा होने के बाद आटा मिश्रित उड़द का दीपक बनाकर उसमें दो बत्ती जो जलने पर एक ही लौ दे, सरसों के तेल में जलायें। एक दीपक पीपल एवं एक दीपक वट वृक्ष पर अर्पित करें। साथ ही गुग्गुल की धूप एवं चंदन की अगरबत्ती भी अर्पित करें। यह उपाय पहले शनिवार से शुरू करें।

16– प्रथम शनिवार को आठ मीटर काले कपड़े में 800 ग्राम की मात्रा में काली उड़द, चावल, गुड़, काली सरसों, काले तिल, जौ, आठ बड़ी कीलें तथा एक–एक सुरमा एवं इत्र की शीशी को कपड़े में बांधकर पोटली का रूप दे दें। अलग से 10 छिलके वाले बादाम लेकर किसी भी हनुमान मंदिर में जायें और पोटली एवं बादाम मंदिर में हीं कहीं रख दें। फिर स्टील की कटोरी में सिंदूर को चमेली के तेल से गीला कर प्रसाद एवं पीले फूलों के साथ प्रभु को अर्पित करें। बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें, और सात बार परिक्रमा करें। तत्पश्चात पोटली मंदिर में ही छोड़ दें। दस बादाम में से आधे बादाम भी मंदिर में ही छोड़ दें और बाकी के बादाम लाकर किसी नये लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें। कष्टमुक्ति के साथ लाभ प्राप्त होगा।

17– आठ शनिवार लगातार किसी ब्राह्मण को उड़द की दाल की खिचड़ी खिलायें। दान में काले कपड़े में उड़द की दाल की ही खिचड़ी बांधकर आठ सिक्के के रूप में दक्षिणा दें।

18– पहले शनिवार को अपने से 19गुना अधिक काला धागा लेकर उसे एक माला का रूप दें, जो गले में पहनी जा सके। किसी भी शनि मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप दिखायें। फिर उस माला को गले में धारण करें। तुरंत लाभ मिलेगा।

19– शनिवार को घर में पूजास्थल में बैठकर यह क्रिया करें। इस क्रिया में आठ उड़द मिश्रित दीपक बनाकर उसमें सरसों का तेल भरें। दीपक में दो बत्तियां बनाकर उन्हें एक साथ जलायें, ताकि जलने पर एक ही लौ दे। दीपक में थोड़ा सा सिन्दूर के साथ काले घोड़े की नाल का छल्ला एवं एक कील डालें। काले हकीक की माला से किसी भी शनि मंत्र का 11 माला जाप करें और प्रणाम कर उठ जायें। अगले दिन छल्ला निकालकर दायें हाथ की मध्यमा में धारण करें और दीपक किसी पीपल पर अर्पित कर दें।

20– प्रत्येक शनिवार को आप चोकर सहित तीन मोटी रोटियां अपने ही हाथ से बनायें। एक रोटी के एक ओर सरसों एवं दूसरी ओर शुद्ध घी लगायें। अन्य दो रोटियों में से एक पर घी और एक पर सरसों का तेल चुपड़कर उस पर गुड़ रखें। दोनों ओर चुपड़ी रोटी काली गाय को, सरसों के तेल वाली रोटी कुत्ते को एवं घी चुपड़ी रोटी किसी गरीब मजदूर को दे दें।

21– शमी वृक्ष या बिछुआ की जड़ को शनिपुष्य या शनिवार के श्रवण नक्षत्र में लाकर काले कपड़े में बांध कर अपनी दायीं भुजा पर बांधें। तुरन्त लाभ होगा।

22– किसी भी पहले शनिवार को आप आठ मीटर काला कपड़ा, एक जटा नारियल, काले तिल, काली उड़द, गुड़, जौ, काली सरसों, काला नमक प्रत्येक सामग्री 800 ग्राम, हवन सामग्री, आठ बड़ी टोपीदार कील, इतने ही सिक्के तथा बोतल में 800 ग्राम सरसों एवं चमेली का तेल, दो शीशी काजल तथा दो शीशी काले सुरमे लेकर कपड़े की पोटली बना दें। अपने सिर से सात बार उसार कर किसी डाकौत को दान कर दें। यह उपाय लगातार आठ माह करें। फिर वर्ष में दो बार कर सकते हैं।

23– मांस–मदिरा से दूर रहें।

24– किसी के सामने अपनी समस्याओं या कष्टों के बारे में बात ना करें।

25– घर के मुख्य द्वार की देहरी पर चाँदी का पत्तर दबायें।

26– काले वस्त्र धारण करें।

27– घर के किसी अंधेरे भाग में किसी लोहे के पात्र में सरसों का तेल भरकर उसमें ताँबे के सिक्के डालकर रखें।

28– शनिदेव की कोई भी वस्तु बिना पैसे दिये किसी से भी ना लें।

29– काले घोड़े की नाल लाकर घर के मुख्य द्वार के नीचे दबायें।

30– शनिवार को काले घोड़े की पूंछ के आठ बाल लेकर उन्हें किसी लकड़ी की डिब्बी में रखकर 43 दिन तक अपने शयनकक्ष में रखें। अंतिम दिन बाल को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर बहते जल में प्रवाहित कर दें।

31– शुक्रवार को 800 ग्राम काले तिल पानी में भिगों दें। अगले दिन उन्हें पीस कर गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू बनायें और काले घोड़े को खिलायें। यह उपाय आठ शनिवार करें।

32– सा–साढ़ेसाती के दौरान अपनी पैतृक संपत्ति ना बेचें। अधिक कष्ट में पड़ सकते हैं।

33– रात्रि के समय सिर्फ शनि का दान करें, किसी को शनि की वस्तु ना दें।

34– नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, कष्टों में कमी आयेगी।

35– शनिवार को श्री भैरों मंदिर में शराब अर्पित करें, कष्टों में कमी आयेगी।

36– किसी शनिवार को वीराने स्थान में आठ शीशी सुरमें दबायें।

37– शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करें।

38– प्रत्येक शनिवार को किसी सिद्ध हनुमान मंदिर में नारियल अर्पित करें।

39– अपने शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की कील ठुकवायें।

40– अपने घर के दक्षिण एवं पश्चिम में कोई पत्थर की शिला रखें।

# सूर्य ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।

भास्वान्काश्यपगोत्रजोऽरुणरुचिर्यः सिंहराशीश्वरः
षट्त्रिस्थो दश शोभनो गुरुशशीभौमेषु मित्र सदा।
शुक्रो मंदरिपुकलिङ्गजनितश्चाऽग्नीश्वरो देवता
मध्येवर्तुल पूर्वादिग् दिनकरः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

## सूर्य ग्रह के लिए रत्न

### भावगत/राशिगत सूर्य का फल

आपकी कुण्डली में सूर्य सिंह राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे, यदि सूर्य अपने नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी में स्थित है, तो यह आपके भाग्य में और वृद्धि करेगा। आपका ओजपूर्ण व्यक्तित्व, प्रसन्नचित्त स्वभाव, शाही चहरे वाले और प्रचूर धन से पूर्ण होंगे। आप सदा आशावादी, उर्जावान, उत्साही, विशाल हृदय, निडर, साहसी, वीर, स्थायी कसौटी में सख्त और बहुत जबरदस्त होंगे। आप अपने सभी शत्रुओं को परास्त करेंगे, अपने अधिकारों को स्थापित करेंगे और कुछ उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय कार्यों के लिए विख्यात होंगे। आपके मित्र उच्च पदों पर होंगे और सत्ता के गलियारों में आपका बहुत आना–जान हो सकता है। आप सरकारी सेवा में उत्तम पद पर काम कर सकते हैं या किसी अन्तर्राष्ट्रीय या कम से कम राष्ट्रीय स्तर के संगठन में एक ऊँचा पद प्राप्त कर सकते हैं। लोग आपको बहुत सम्मान देंगे और आपका नाम तथा यश चारों ओर फैलेगा। आपका जीवन आनन्द और खुशियों से पूर्ण होगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। जैसाकि आपका लग्न मिथुन है, सूर्य की सिंह राशि में स्थिति कुछ मामलों में एक अनुकूल योग है। आप बहुत साहसी और निडर होंगे, आपकी लिखावट बहुत सुन्दर होगी और आप अपनी पसन्द के विभिन्न विषयों का अनौपचारिक अध्ययन करेंगे, विशेषकर यदि सूर्य अपने नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी में स्थित है, और/या बुध सूर्य के साथ स्थित है। अपने व्यवसाय के क्षेत्र में आप उत्तम कार्य करेंगे और अपने समकालीनों को पीछे छोड़ते हुए एक स्तरीय और मर्यादापूर्ण पद को प्राप्त करेंगे। आपका कोई एक सगा छोटा अनुज बहुत बुद्धिमान होगा और अपनी कुछ विशेष उपलब्धियों से नाम और यश प्राप्त कर सकता/सकती है।

## सूर्य ग्रह से संबंधित दोष और उनके उपाय

### अमावस्या तिथि का जन्म

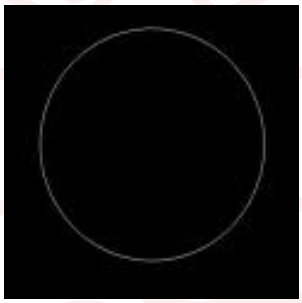

यदि आपका जन्म अमावस्या के दिन हुआ है, तो इस दिन जन्म होने के कारण आपके पारिवारिक और मानसिक सुख में कमी, संतान सुख में बाधा और यथोचित मान–सम्मान में कमी आ सकती है। आपको सफलता के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ सकता है और योग्यता होते हुए भी आपको मान्यता नहीं मिल सकती है।

**आपका जन्म अमावस्या के दिन नही हुआ है।**

### कार्तिक मास का जन्म

सूर्य का अपनी नीच राशि तुला में रहने के दौरान जन्म लेने वाले जातक पर कार्तिक जन्म का दोष लागू होता है। अपने सबसे नीच बिन्दु के आस–पास कार्तिक जन्म दोष का प्रभाव सबसे अधिक होता है।

**आपका जन्म कार्तिक मास में नही हुआ है।**

### संक्रांति के दिन का जन्म

जिस दिन सूर्य अपनी अगली राशि में प्रवेश करता है, वह दिन संक्राति दिन कहलाता है। यदि आपका जन्म संक्रांति के दिन हुआ है, तो इस दिन जन्म लेने के कारण आपके वंश वृद्धि, आर्थिक स्थिति और स्वास्थ्य पर सूर्य का अशुभ प्रभाव पड़ सकता है।

**आपका जन्म संक्रांति के दिन नही हुआ है।**

### सार्पशीर्ष में जन्म

यदि आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू हो रहा है, तो इस दोष के साथ जन्म लेने के कारण आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है तथा आप सब प्रकार के सुखों से हीन हो सकते हैं।

**आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू नहीं हो रहा है।**

## क्रांतिसाम्य या महापात में जन्म

यदि आपका जन्म क्रांतिसाम्य या महापात में हुआ है, तो आपके स्वास्थ्य और शारीरिक सुखों में कमी आ सकती है। आप असहाय हो सकते हैं।

**आपका जन्म क्रांतिसाम्य या महापात में नहीं हुआ है।**

## सपात सूर्य दोष

यदि आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य राहु या केतु के साथ स्थित है, तो आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

**आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष नहीं लागू हो रहा है।**

## सूर्य ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य के गोचर, महादशा या अंतर्दशा के दौरान रविवार का व्रत (उपवास) रखना चाहिए। व्रत (उपवास) की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करना चाहिए। यह व्रत (उपवास) कम से कम 12 और अधिकतम 30 रविवार को रखना चाहिए। व्रत (उपवास) के दौरान खाने में गेहूँ के आटे की चपाती, गुड़, हलवा, घी का उपयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग बिल्कुल ना करें। खाना सूर्यास्त से पहले खाना चाहिए। यदि आप लाल कपड़ा पहन कर एवं अपने ललाट पर लाल चंदन का लेप लगाकर सूर्य के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 5 माला (540) जप करें तो व्रत (उपवास) का फल अधिक

लाभदायक होगा। अंत में हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, धन एवं भोजन का दान करें।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

## सूर्य ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

सूर्य के लिए बेल की जड़ या बेंत की जड़ गुलाबी रंग के कपड़े में सिलकर रविवार या कृतिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सूर्योदय के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

## सूर्य ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– खस, मधु, नागरमोथा, अमलतास, छोटी इलायची।

जड़ी– बेल मूल एवं कमल बेंत की जड़।

## सूर्य को अर्घ्य देने की विधि एवं मंत्र

सूर्य को अर्घ्य देने से सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति होती है। इससे बुद्धि का विकास होता है, एवं कई प्रकार के लाभ होते हैं।

सूर्योदय के दौरान ताँबे के लोटे में जल भरकर उसमें लाल चंदन, लाल फूल, अक्षत एवं दूध आदि डालकर सूर्याभिमूख होकर अर्घ्य देना चाहिए। सबसे पहले सूर्य का ध्यान करते हुए निम्न विनियोग का जाप करें –

**ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता, गायत्री छन्दः, सूर्यार्घ्यदाने विनियोगः।**

फिर सूर्य का आह्वान करके निम्न श्लोक का जाप करते हुए अर्घ्य दें –

**एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते।**
**रूणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते।।**

**ध्यान मंत्र –**

**रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं भानुं समस्तजगतामधिपं भजामि।**
**पद्मद्वयाभयवरान् दधतः कराब्जैर्माणिक्यमौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम्।।**

## सूर्य नमस्कार

**सूर्य नमस्कार मंत्र :**

**जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।**
**तमोऽरि सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।**

सूर्य नमस्कार से आत्मा की शुद्धि होती है, मानसिक उलझनों एवं विघ्नों से मुक्ति मिलती है तथा उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त होता है।

## सूर्य ग्रह के साधारण उपाय

प्रातः उठने के बाद मुँह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुँह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से दूर रहें।
4– अकारण ही क्रोध करने से बचें।

## सूर्य ग्रह के लिए स्नान और दान

आप रविवार के दिन सुबह में गेहूँ, साबुत मसूर, गुड़, तांबे की कोई वस्तु एवं लाल फूल का दान करें। आप अपने स्नान के जल में केसर या इलायची पीसकर या इसका इत्र डालें।

## सूर्य ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| 6 | 1 | 8 |
| 7 | 5 | 3 |
| 2 | 9 | 4 |

तांत्रिक यंत्र

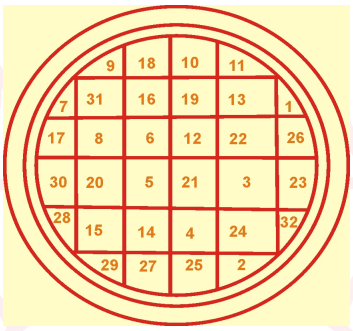

# चन्द्रमा ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।



चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितनिभश्चात्रेय गोत्रोद्भव–
श्चाग्नेयश्चतुरस्र वारुणमुखश्चापोऽप्युमाधीश्वरः।
षट् सप्तानि दशैक शोभनफल शौरिः प्रियोऽर्को गुरुः
स्वामी यामुनदेशजो हिमकरः कुर्यात् सदा मंगलम।।

## चन्द्रमा ग्रह के लिए रत्न

### भावगत/राशिगत चन्द्रमा का फल

आपकी कुण्डली में चंद्रमा मेष राशि में स्थित है। इस कारण आपकी आंखे बड़ी, गोल और लालिमा लिये हुए हो सकती हैं तथा दिमाग कुछ हद तक अस्थिर और प्रकृति बहुत शीघ्र नम्र पड़ जाने वाली हो सकती है। आपको गर्म शाकाहारी भोजन का शौक हो सकता है, लेकिन आपकी भूख औसत से कम हो सकती है। आपके घुटने कमजोर हो सकते हैं, लेकिन यात्रा करने का बहुत शौक हो सकता है। आप अपने काम में दक्ष होंगे, अपने व्यवसाय के क्षेत्र में सम्पन्न होंगे और बहुत अभिमानी हो सकते हैं। लोग आपको उचित सम्मान और आदर देंगे। आप साहसी और निडर होंगे एवं विरोध होने पर तुरन्त झगड़ा करने को तैयार हो सकते हैं। आप विपरीत लिंग के अनुकूल लोगों की संगति के बहुत शौकीन होंगे। आपको पानी से कुछ खतरा हो सकता है और जलीय स्थानों जैसे तालाब, नदी आदि के पास जाने से आपको बचना चाहिए। आपमे सगे भाई–बहनों की संख्या कम हो सकती है और आपकी प्रथम संतान एक योग्य पुत्र हो सकता है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा ग्यारहवें भाव में स्थित है। इस कारण से आपकी कोई बड़ी बहन हो सकती है और आपकी पुत्रियों की संख्या अधिक हो सकती है। आपके मित्रों और परिचितों का दायरा बहुत बड़ा होगा, लेकिन उनमें से कुछ ही विश्वसनीय होंगे और अधिकतर से आपके संबंध बहुत लम्बे नहीं हो सकते हैं। आपको विभिन्न स्रोतों से लाभ होगा, लेकिन आपकी आय में बहुत उतार–चढ़ाव हो सकता है। हालांकि मुकदमों में जीतने और खोयी हुई वस्तु को प्राप्त करने के मामले में आप काफी भाग्यशाली होंगे। यदि चंद्रमा वषभ या कर्क राशि में स्थित है, तो आपके पास कई आकर्षक विलासिता के वाहन हो सकते हैं।

## चन्द्रमा ग्रह से संबंधित दोष और उनके उपाय

### एक नक्षत्र जन्म दोष

यदि आपका जन्म आपके अपने भाई–बहनों अथवा अपने माता–पिता के नक्षत्र में हुआ है, तो एक नक्षत्र जन्मदोष लागू होता है। इस दोष की वजह से आपके पूरे परिवार की सुख–शांति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।

**शांति के उपाय –**

अपने घर में किसी साफ–सुथरे स्थान पर पूजा बेदी का निर्माण करें और उस पूजा स्थान से ईशान कोण में एक कलश स्थापना करें। उस कलश को नये वस्त्र से ढक दें। देवताओं की पूजा के पश्चात सारे नक्षत्रों की पूजा करें। उसके बाद कलश पर जन्म नक्षत्र के देवता की विशेष रूप से पूजा करें। जन्म नक्षत्र के मंत्र से 108 आहुतियां देकर हवन करें। अपनी सामर्थ्य अनुसार अन्न, वस्त्र आदि का दान करें। जब चंद्रमा बड़े बिम्ब वाला हो, शुभ लग्न हो तथा रिक्ता तिथि एवं भद्रा करण ना हो, तो चंद्रमा के अनुकूल गोचर में यह उपाय करें।

## लग्नस्थ चन्द्र दोष

यदि आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है, तो आपकी विचारधारा इस तरह से दृढ़ हो सकती है कि आप समयानुसार अपने को बदल नहीं सकते हैं, जिसकी वजह से आप हठी और काफी हद तक अव्यवहारिक दृष्टिकोण वाले बन सकते हैं। आपकी मानसिक स्थिति के कारण आपके कार्य करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

**आपकी कुण्डली में लग्नस्थ चन्द्र दोष नहीं लागू हो रहा है।**

## क्षीण चंन्द्र दोष

यदि आपका जन्म कृष्णपष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी के बीच में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में क्षीण चंद्र दोष लागू होता है। आप तुनकमिजाज, काम में लापरवाही बरतने वाले एवं बिना किसी लक्ष्य के काम करने वाले हो सकते हैं। कभी–कभी अवसाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

**आपकी कुण्डली में क्षीण चन्द्र दोष नहीं लागू हो रहा है।**

## केमद्रुम योग दोष

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा के आगे एवं पीछे के भावों में कोई ग्रह नहीं है, तो आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू होता है। आपको जीवन पर्यन्त धन की कमी लगी रह सकती है, जिसके कारण पारिवारिक सुख और मानसिक शांति में कमी हो सकती है। यदि कुण्डली में चंद्रमा के साथ कोई ग्रह स्थित है या किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है या चंद्रमा या लग्न से केन्द्र में कोई ग्रह स्थित है, तो केमद्रुम योग का प्रभाव कम हो जाता है।

**आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष नहीं लागू हो रहा है।**

## सपात (चंद्रमा राहु या केतु के साथ) चन्द्र दोष

यदि आपकी जन्म कुण्डली में चंद्रमा राहु या केतु के साथ स्थिति है, तो आपकी कुण्डली में सपात चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

**आपकी कुण्डली में सपात चन्द्र दोष लागू हो रहा है।**

**शांति के उपाय –**

आपको त्र्यम्बक मंत्र का संपुट लगाकर रूद्रसूक्त का पाठ करना चाहिए। हर साल अपने जन्मदिवस के दिन प्रातः घी में दूब को डूबोकर त्र्यबकम मंत्र से 28 या 108 आहूतियां दें। उस दिन व्रत भी रखें।

## नीच चंन्द्र दोष

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ है। शास्त्रों के अनुसार, आपकी कुण्डली में नीच चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस दोष के कारण आपकी मानसिक स्थिति पर बुरा असर पड़ सकता है।

**आपकी कुण्डली में नीच चंन्द्र दोष नहीं लागू हो रहा है।**

## कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष

आपका जन्म कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन हुआ है। आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है। आपके वैवाहिक जीवन में बाधा आ सकती है, परिवार में मान–सम्मान की कमी हो सकती है, धन की कमी हो सकती है तथा जीवनसाथी पर भी बुरा असर पड़ सकता है। आपके मन में आत्मघात की प्रवृति ज्यादा हो सकती है।

**आपकी कुण्डली में कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष नहीं लागू हो रहा है।**

## गण्डमूल दोष

यदि आपका जन्म नक्षत्र रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, मूल, श्लेषा या मघा है, तो आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू होता है।

**आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू हो रहा है।**

**शांति के उपाय –**

भगवार शंकर की पूजा करें। गण्डमूल शांति के लिए जन्म के बारहवें दिन, सताइसवें दिन या एक साल के भीतर कभी भी जन्म नक्षत्र में गण्डमूल की शांति करवा लेनी चाहिए।

## नक्षत्र गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म चंद्रमा के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्र के शुरूआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

**आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष नहीं लागू हो रहा है।**

## लग्न गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म लग्न के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्र के शुरूआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में मूल गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

**आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष नहीं लागू हो रहा है।**

## तिथि गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म पूर्णा (5, 10, 15) तिथि के अंतिम 48 मिनट में या नन्दा (1, 6, 11) तिथि के शुरूआती 48 मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

**आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष नहीं लागू हो रहा है।**

## चन्द्रमा ग्रह के साधारण उपाय

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा–धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जप करें। चंद्रमा कवच का पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस–मदिरा का सेवन ना करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।

2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।

3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से बचना चाहिए।

4– अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

## चन्द्रमा ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सोमवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को रखनी चाहिए। व्रत तोड़ने से पहले आपको सफेद कपड़े पहनना चाहिए एवं अपने ललाट पर सफेद चंदन का लेप लगाना चाहिए। चंद्रमा को सफेद फूल अर्पित करें और चंद्राम के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करें। अपने खाने में नमक, दही, चावल, घी एवं गुड़ का प्रयोग ना करें। अंतिम सोमवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीबों के बीच खाना वितरित करें।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

## चन्द्रमा ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

चंद्रमा के लिए खिरनी की जड़ को सफेद रंग के कपड़े में सिलकर सोमवार या रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा की रात में गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

## चन्द्रमा ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– लाल चंदन, कपूर, अगर, तगर, केसर, गोरोचन।
जड़ी – खिरनी की जड़।

## चन्द्रमा ग्रह के लिए स्नान और दान

चंद्रमा के लिए शुद्ध देशी घी से भरकर नया बर्तन, सफेद वस्त्र, गन्ना, दूध, चावल, चांदी, शंख, कपूर, छोटी इलायची, चीनी, चंदन, कांसे का बर्तन इत्यादि का दान करना चाहिए। नहाते समय नहाने के पानी में थोड़ा सा दूध या दही डालकर नहाने से चंद्रमा प्रसन्न होते हैं।

## चन्द्रमा ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे

जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| 7 | 2 | 9 |
| 8 | 6 | 4 |
| 3 | 10 | 5 |

तांत्रिक यंत्र

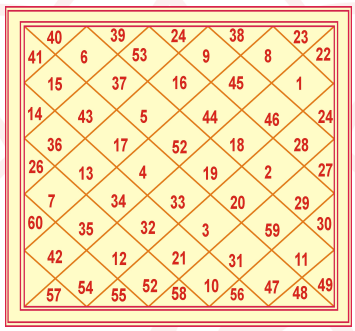

# मंगल ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

**ओं क्षितिपुत्राय विद्महे लोहितांगाय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात।**

**भौमो दक्षिणादिक् त्रिकोण यमदिग् विघ्नेश्वरो रक्तभः,**
**स्वामी वृश्चिक मेषयोः सुरगुरुश्चाऽर्कः शशी सौहृदः।**
**ज्ञोऽरि षट्त्रिफलप्रदश्च वसुधास्कन्दौ क्रमाद् देवते,**
**भारद्वाजकुलोद्भवः क्षितिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।**

## मंगल ग्रह के लिए रत्न

### भावगत/राशिगत मंगल का फल

आपकी कुण्डली में मंगल कन्या राशि में स्थित है। इस कारण से यद्यपि आप कुछ मामलों में भाग्यशाली होंगे, फिर भी कुछ अन्य मामलों में अप्रसन्न हो सकते हैं– यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं है। यदि मंगल पीड़ित नहीं है, तो आप सुशिक्षित व्यक्ति होंगे और पवित्र प्राचीन शास्त्रों के एक विद्वान व्यक्ति होंगे। लेकिन यदि यह पीड़ित है तो आपको कुछ रोग हो सकते हैं और आपकी शिक्षा व्यवधान के कारण केवल औसत स्तर की हो सकती है। ऐसे में आप व्यवहारिक कला या शिल्प सीख सकते हैं। यद्यपि आप सम्मान के योग्य हो सकते हैं, फिर भी आपमें उतनी चाह नहीं हो सकती है– जिससे आक्रामक लोग लाभकारी परिस्थितियों में आपको पीछे छोड़कर आगे निकल सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल चौथे भाव में स्थित है। यदि मंगल मेष या वृश्चिक या मकर राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे– जैसाकि आप रूचक योग (एक पंचमहापुरुष योग) के लाभकारी परिणामों का आनन्द प्राप्त

करेंगे। इस कारण से आप बहुत उर्जावान और प्रतापी होंगे और अपने साहसी कामों के बल पर अपने उद्देश्यों को प्राप्त करेंगे। आप मंत्रों और यंत्रों में निपुण होंगे। यदि मंगल कर्क राशि में स्थित है, तो आप धनवान होंगे, लेकिन आपको पानी से कुछ भय हो सकता है। यदि मंगल किसी अन्य राशि में स्थित है, तो आपका अपने माता–पिता से झगड़ा हो सकता है और घर पर आग या चोरी के कारण या भूमि और भवन में अनुमानित निवेश के कारण आपको नुकसान हो सकता है।

## भावगत/राशिगत मंगल का विशेष फल

आपकी कुण्डली में मंगल कन्या राशि में बैठा हुआ है। आप खर्चीले स्वभाव वाले हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपकी आर्थिक स्थिति पर बुरा असर पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में मंगल चौथे भाव में स्थित है। आपके घर में सुख–शांति की कमी हो सकती है तथा मित्रों और संबंधियों से आपके रिश्ते मुधर नहीं हो सकते हैं।

यदि आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, तो आप मंगल कष्ट निवारक मंत्र का प्रतिदिन 8 बार जप करें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी हो, तो आप रामचरितमानस के सुन्दर काण्ड का पाठ करें।

यदि आपके घर में अशांति हो तो ऊँ हां हां सः खं खः। मंत्र का 108 बार जाप करें। यदि यह पाठ घर के मुखिया या उनकी पत्नी के द्वारा किया जाता है, तो लाभ मिलने की संभावना अधिक हो सकती है।

यदि आपमें उत्साह की कमी या ज्यादा क्रोध अथवा अपने विचारों को व्यक्त ना कर पाने की कमी हो, तो आपको प्रतिदिन 28 बार मंगल गायत्री का जप करना चाहिए।

यदि मंगल दोष के कारण आपको बार––बार या साधारण चोट इत्यादि लगती है, तो आपको मंगल कवच का पाठ करना चाहिए।

यदि मंगल के कुप्रभाव आपकी संतान पर आ रहे हों तथा संतान का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता हो अथवा आपकी बात ना मानते हों, तो आपको मंगल कष्ट निवारक मंत्र का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए।

यदि आप धन हानि, कर्ज में बढ़ोत्तरी आदि से परेशान हैं, तो आपको नियमित रूप से एक साल तक मंगलवार का व्रत करना चाहिए, जिससे मंगल के राशि जनित या भाव जनित दोष दूर हो सकते हैं।

## मंगल ग्रह के साधारण उपाय

आपको रूद्रसूक्त का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। भैरव और हनुमान जी की नियमित पूजा करें। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें। यदि रूद्रसूक्त का जप मुश्किल है, तो आगे लिखे हुए मंत्र का प्रतिदिन 28 बार जप करें।

अघोरेभ्यों अघघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेतु रूद्ररूपेभ्यः।

मित्रों और संबंधियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने से मंगल का अशुभ प्रभाव कम होता है।

## मंगल ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 मंगलवार रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जीन्दगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार 1, 5 या 7 माला का जप करना चाहिए। सांड़ को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं लाल कपड़ा, तांबा, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

## मंगल ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफनी (गो जिव्हा संगमुसी नाग जिव्हा) की जड़ को लाल रंग के कपड़े में सिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

## मंगल ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सोंठ, चमेली का तेल, कुमकुम।
जड़ी– सौंफ की जड़, नाग जिव्हा, अनन्त मूल।

## मंगल ग्रह के लिए स्नान और दान

लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेहूँ, मसूर, या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता के लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करना चाहिए।

## मंगल ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| 8 | 3 | 10 |
| 9 | 7 | 5 |
| 4 | 11 | 6 |

### तांत्रिक यंत्र

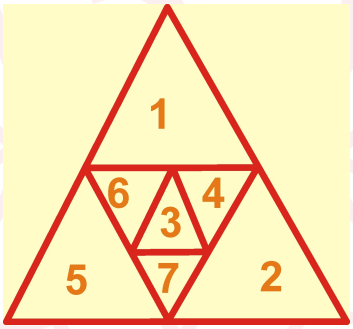

# बुध ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

**ओं चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्।**

**सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रोद्भवो।**
**बाणेशानदिशः सुहृच्छनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः।।**
**कन्या युग्मपतिर्दशाष्ट चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो।**
**विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।**

## बुध ग्रह के लिए रत्न

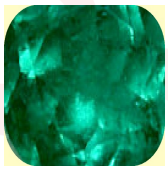

### भावगत/राशिगत बुध का फल

आपकी कुण्डली में बुध कन्या राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। यदि सूर्य या शुक्र इस राशि में स्थित है, तो आपके भाग्य में और बढ़ोत्तरी होगी। आप एक सदाचारी स्वभाव वाले विद्वान व्यक्ति, कुशल वक्ता और बहुप्रज लेखक होंगे। आप पवित्र प्राचीन शास्त्रों का अध्ययन करेंगे और लोगों से सीधा संवाद करने के शौकीन होंगे। ललित कलाओं के किसी क्षेत्र में आपको गहरी रूचि हो सकती है और आप उसमें दक्ष हो सकते हैं। आप किसी व्यवहारिक कला या शिल्प में निपुणता प्राप्त कर सकते हैं। आप में दूसरों की सेवा करने की भावना होगी और किसी उत्तम उद्देश्य के लिए काम करने की भारी चाह होगी। आप कभी–कभी तार्किक हो सकते हैं, लेकिन फिर भी आप ईमानदार, गंभीर और विनम्र होंगे।

आपकी कुण्डली में बुध चौथे भाव में स्थित है। यदि बुध मिथुन या कन्या राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे– जैसाकि आपको भद्र योग (एक पंचमहापुरुष युति) का सुख मिलेगा। इस कारण से आप एक

विद्वान, बुद्धिमान और मृदुभाषी व्यक्ति होंगे, इसके अलावा, आप अपने सभी कामों में निडर और सफल होंगे। कुछ हद तक गोपनीय होने के कारण आपके संबंध अपनों से आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आप एक विद्वान व्यक्ति होंगे और लोग आपको सम्मान तथा आदर देंगे। यदि बुध मीन में स्थित है, तो आप एक औसत व्यापार कर सकते हैं– जैसे एक सिलाई केन्द्र। यदि किसी और राशि में है, तो आप इधर–उधर भटकते रह सकते हैं और सामान्यतः अपने सभी मामलों में बहुत अस्थिर हो सकते हैं।

## भावगत/राशिगत बुध का विशेष फल

आपकी कुण्डली में बुध कन्या राशि में स्थित है। आप दूसरों की सहायता करने में आगे रह सकते हैं। आपमें अपनी प्रशंसा सुनने की बुरी आदत होगी। लोग आपकी झूठी प्रशंसा करके अपना काम निकाल सकते हैं। इस वजह से आपको आर्थिक हानि का सामना करना पड़ सकता है।

यदि आपकी वाणी में दोष है, जैसे हकलाना, तुतलाना इत्यादि अथवा बुद्धि कमजोर है या अपने जुबान पर नियंत्रण नहीं है, तो आप कार्तिकेय मंत्र का जप पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर दस बार करें। यह जप पुष्य नक्षत्र से शुरू करके अगले 27 दिनों तक करें।

यदि आप अपने विचार प्रकट करने में असमर्थ है या जनसमुदाय इत्यादि के सामने आप नहीं बोल पा रहे हैं, तो आप बुध कवच का नियमित पाठ करें।

यदि आपको तनाव से नींद नहीं आती है या नींद आने पर बुरे सपने दिखाई देते हैं, तो आपको बुध गायत्री मंत्र का दिन में 3 बार जप करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि आपकी त्वचा में कोई विकार है, जैसे छोटे फुंसियों––फोड़े इत्यादि, तो इन विकारों को दूर करने के लिए शीतला माता के मंत्र का 10 हजार बार जप करें। जप समाप्त होने पर इसी मंत्र से 1000 आहूति दें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आपको व्यापार में सफलता नहीं मिल पाती है, तो बुध गायत्री का 10 हजार जप करें। जप के पश्चात अपने सामर्थ्य के अनुसार मूंग, घी, चाँदी या हाथी दाँत से बनी वस्तु का दान करें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आप किसी असाध्य रोग से पीड़ित है, तो आपको विष्णु सहस्त्र नाम का जप करना चाहिए।

## बुध ग्रह के साधारण उपाय

आपको प्रतिदिन या हर बुधवार के दिन विष्णु सहस्त्र नाम स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नामक द्वादशाक्षरी विष्णु मंत्र का 28 या 108 बार जप करें।

1– बिना अपशब्दों का प्रयोग किए बोलें।

2– अपने से छोटों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।

3– किसी कार्य के लिए गलत तरीका ना अपनायें।

## बुध ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए बुधवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 बुधवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बुध के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 17 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद मूंग दाल के आटे का हलवा या लड्डू या गुड़ से बनी कोई चीज गरीबों में बांटें और खुद भी खायें। व्रत के अंतिम बुधवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इस व्रत से आप शैक्षणिक क्षेत्र या व्यावसायिक मामलों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन व्रत रखने से बुध ग्रह अनुकूल हो जाता है।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

## बुध ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बुध के लिए विधारा की जड़ या भारंगी की जड़ (बिदायरे जड़ या वर धारा जड़) को हरे वस्त्र में सिलकर बुधवार या आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में सुबह के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

## बुध ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– विधारा मूल, देवदार की जड़, सफेद सरसों।
जड़ी– भारंगी की जड़।

## बुध ग्रह के लिए स्नान और दान

आपको स्नान के जल में साबुत चावल या सोने का कोई आभूषण डालकर स्नान करना चाहिए। बुध की प्रसन्नता के लिए चांदी या हाथी दांत से बनी कोई वस्तु, नीला कपड़ा, घी या मूंग दान करना चाहिए।

## बुध ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| 9 | 4 | 11 |
| 10 | 8 | 6 |
| 5 | 12 | 7 |

### तांत्रिक यंत्र

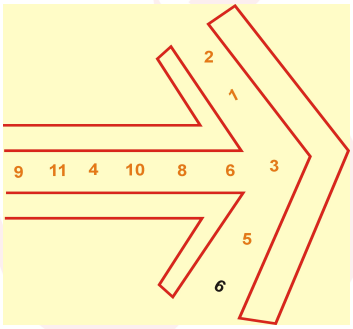

# बृहस्पति ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

**ओं अंगिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।**

**जीवश्चांगिर-गोत्रजोत्तरमुखो दीर्घोत्तरा संस्थितः।**
**पीतोऽश्वत्थ समिद्ध सिन्धुजनितश्चापोऽथमीनाधिपः।।**
**सूर्येन्दु क्षितिज प्रियो बुध सितौ शत्रूममाश्चापरे।**
**सप्तांकद्विभवः शुभः सुरगुरुः कुर्यात् सदा मङ्गलम।।**

## बृहस्पति ग्रह के लिए रत्न

### भावगत/राशिगत बृहस्पति का फल

आपकी कुण्डली में बृहस्पति वृषभ राशि में स्थित है। इस कारण से आप कुछ मामलों में भाग्यशाली होंगे– लेकिन कुछ अन्य मामलों में ऐसा नहीं हो सकता है। आप एक उच्च कोटि के बुद्धिमान और दक्ष व्यक्ति होंगे और अपने विशिष्टतम श्रेणी के ज्ञान और मेधा के कारण अधिक विख्यात होंगे। आप अपने सभी समकालीनों को पछाड़ देंगे। आप एक बहुत प्रतिष्ठित जीवन रक्षक डॉक्टर बन सकते हैं– विशेषकर यदि लग्न सिंह है। यद्यपि आप बहुत सम्पन्न होंगे, लेकिन आपका घरेलू जीवन बहुत खुशहाल या आनन्दपूर्ण नहीं हो सकता है। आप अपने जीवनसाथी के मामले में बहुत भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं, इसके अलावा आपकी एक संतान योग्य नहीं हो सकती है और चिन्ताओं का कारण हो सकती है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति बारहवें भाव में स्थित है। यदि बृहस्पति धनु या मीन राशि में स्थित है, तो आप कई मामलों में बहुत भाग्यशाली होंगे और धनवान होंगे। यदि बृहस्पति किसी अन्य राशि में है और किसी नैसर्गिक

अशुभ ग्रह की दृष्टि या उसके साथ होने से पीड़ित है, तो आप अपनी संतानों के जन्म के संबंध में भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं, इसके अलावा, आपकी उपलब्धियां और स्तर बहुत औसत हो सकता है। कुछ ईर्ष्यालु लोग गुप्त रूप से आपके खिलाफ काम कर सकते हैं और आपके कुछ शत्रु आपके मित्रों के दायरे में छिपे हो सकते हैं। हालांकि आप अपने सगे भाई और बहनों के मामले में भाग्यशाली होंगे– जो आपको खुशी प्रदान करेंगे। आप मवेशियों से लाभ प्राप्त करेंगे और कई नयी सम्पत्तियां अर्जित करेंगे। व्यथित लोगों के प्रति आप दयालु होंगे।

## भावगत/राशिगत बृहस्पति का विशेष फल

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति वृष राशि में स्थित है। आपको अपने जीवनसाथी के कारण परेशानी हो सकती है। और मन उदास रह सकता है। किसी दीर्घकालिक बीमारी के भी शिकार होने की संभावना है।

यदि बृहस्पति की कमजोरी के कारण घर में पैसे की बरकत ना हो, तो गुरु गायत्री मंत्र का दिन में 10 बार पाठ करें।

व्यापार में वृद्धि के लिए आठ गुरु मंत्रों से गंगा जल को अभिमंत्रित करके अपने काम–धंधे की जगह पर छिड़कें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ आपके मतभेद हैं, तो गुरु गायत्री मंत्र का रोज सुबह 10 बार पाठ करें।

यदि आपके बीच कलह की स्थिति है, तो शिव एवं पार्वती की पूजा करें एवं अर्धनारीनटेश्वर स्त्रोत का पाठ सुबह–शाम करें।

यदि लड़की के विवाह में रूकावट आ रही हो या रिश्ता बनते–बनते रह जा रहा हो, तो तीन सौ पार्थिव लिंगों पर पूजा करने से इस समस्या का निवारण हो सकता है। यदि लड़के के विवाह में ऐसी स्थिति बन रही हो, तो दुर्गा सप्तशती का 17 बार पाठ करें।

## बृहस्पति ग्रह के साधारण उपाय

बृहस्पति जनित दोषों को दूर करने के लिए आपको स्कन्द पुराण में वर्णित बृहस्पति स्त्रोत का पाठ करना चाहिए और पूर्णिमा इत्यादि के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा सुननी चाहिए। बृहस्पति देव को हल्दी से रंगे चावल, पीले फूल, पीले चंदन समर्पित करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन साबुत हल्दी, चने की दाल, नमक आदि का दान करना चाहिए।

1– शिक्षकों, गरुओं, वृद्धों, साधु–संतों और उच्च शिक्षित लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
2– कोर्ट–कचहरी में झूठी गवाही ना दें।

## बृहस्पति ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 3 साल तक प्रत्येक गुरुवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बृहस्पति के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करना चाहिए। बृहस्पति को पीले फूल अर्पित करना चाहिए। इस दिन केवल बेसन के लड्डू (गुड़ से बना) या केसरिया या पीला रंग लिए मीठा चावल गरीबों के बीच बांटना चाहिए एवं खुद भी खाना चाहिए। व्रत के अंतिम गुरुवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीब ब्राह्मणों के बीच भोजन (पीला रंग लिए खाना) बांटें। इस व्रत को करने से आप बुद्धिमान, विद्वान एवं धनवान होंगे। अगर कोई अविवाहित कन्या इस व्रत को करे तो जल्द शादी की संभावना होती है।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

## बृहस्पति ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बृहस्पति के लिए हल्दी की गांठ या केले की जड़ को पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या पुनर्वसु, विशाखा या पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में शाम के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

## बृहस्पति ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– हल्दी, सूखा गुलाब।
जड़ी– केले की जड़।

## बृहस्पति ग्रह के लिए स्नान और दान

स्नान करते समय जल में बड़ी इलायची, पीली सरसों के दाने डालकर स्नान करने से बृहस्पति जनित दोषों का निवारण होता है। बृहस्पति की प्रसन्नता के लिए हल्दी, पीला कपड़ा, पीला अन्न, नमक, मेंहदी या नींबू का दान करना चाहिए।

## बृहस्पति ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक

जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| 10 | 5 | 12 |
| 11 | 9 | 7 |
| 6 | 13 | 8 |

तांत्रिक यंत्र

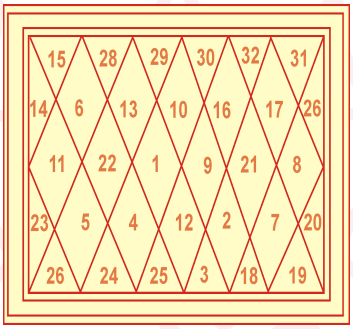

# शुक्र ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

**ओं भृगुपुत्राय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।**

**शुक्रो भार्गवगोत्रजः सितनिभः प्राचीमुखः पूर्वदिक्।**
**पञ्चाङ्गो वृषभस्तुलाधिप महाराष्ट्राधिपोदुम्बरः।।**
**इन्द्राणी मघवानुभौ बुध शनी मित्रार्क चन्द्रौ रिपू।**
**षष्ठो द्विर्दश वर्जितो भृगुसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।**

## शुक्र ग्रह के लिए रत्न

### भावगत/राशिगत शुक्र का फल

आपकी कुण्डली में शुक्र कन्या राशि में स्थित है– जहां यह नीचस्थ है, लेकिन नीचता एक निर्णायक प्रक्रिया बिल्कुल भी नहीं है। वरन् शुक्र इस राशि में स्थित होने पर कुछ असाधारण लाभकारी परिणाम देता है– विशेषकर यदि बुध या बृहस्पति इसके साथ है, या उनकी दृष्टि इस पर है। आप आर्थिक मामलों और अपने जीवनसाथी के साथ मधुर संबंध रखने में भाग्यशाली होंगे, आपकी पुत्रियां अधिक हो सकती हैं। इस राशि में शुक्र बुध की चारित्रिक विशेषताओं पर बल देता है, आप एक विद्वान और बुद्धिमान व्यक्ति होंगे एवं आपको एक स्तरीय तथा ऊँचा पद मिलेगा, साथ ही आप ललित कलाओं के किसी क्षेत्र में बहुत सफल हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में शुक्र चौथे भाव में स्थित है। यदि शुक्र वृषभ या मीन या तुला राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे– जैसाकि आपको मालव्य योग (एक पंचमहापुरुष युति) का सुख प्राप्त होगा। इस कारण से आपमें कई वांछित गुण होंगे और आप जीवन के सभी प्रकार के आरामों और सुखों का आनन्द प्राप्त करेंगे,

आपको मौजमस्ती प्रिय हो सकती है, लेकिन आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। आपका जीवनसाथी स्वस्थ, आवेगी, सहयोगी और आप से लगाव रखने वाला होगा। आप हमेशा उत्तम कार्य करने में रत रहेंगे एवं उत्तम कार्यों के लिए उदारता पूर्वक दान करेंगे। आपके मित्र ऊँचे पदों पर होंगे और लोग सदा आपको बहुत सम्मान देंगे। यदि शुक्र किसी और राशि में स्थित है, तो आप अपने जीवनसाथी और भौतिक सुखों के मामले में भाग्यशाली होंगे। आपके भाग्य का उदय आपके जन्मस्थान या निवास स्थान पर ही होगा।

## भावगत/राशिगत शुक्र का विशेष फल

आपकी कुण्डली में शुक्र कन्या राशि में स्थित है। विपरीत लिंग की व्यक्तियों के साथ आपके नजदीकी संबंध हो सकते हैं, जिससे आपकी बदनामी भी हो सकती है। आप आंख, नाक, कान एवं गले के किसी रोग या दोष से परेशान हो सकती हैं।

आपकी कुण्डली में शुक्र बुध के साथ स्थित है। आप एक समय में एक से अधिक व्यवसाय या काम करने की कोशिश कर सकती हैं, जिससे आपको पर्याप्त सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है।

संतान सुख के लिए कन्याओं को किसी भी प्रकार से ठेस नहीं पहुंचाना चाहिए। नवरात्र के दौरान कन्याओं का पूजन कर अपने सामर्थ्य के अनुसार भोजन एवं वस्त्र उपहार देना चाहिए। साल में किसी अवसर पर किसी व्यक्ति को शिव––पार्वती या विष्णु––लक्ष्मी का फोटो भेंट करना चाहिए या किसी ब्राह्मण को बिछाने योग्य चादर, तकिया या वस्त्रों का जोड़ा दान करना चाहिए। सौन्दर्य लहरी स्त्रोत या देवी सूक्त और श्रीकवच का रोजाना पाठ भी काफी लाभदायक होगा।

यदि शुक्र के दोष के कारण काम––वासना अनियंत्रित हो या अप्राकृतिक वासना के प्रति रूझान हो, तो आपको अथर्ववेद में कहे गये शिव संकल्प का रोजाना सोते समय एक बार पाठ करना चाहिए। आप शुक्र गायत्री का भी रोजाना 10 बार पाठ कर सकते हैं।

यदि घर में दरिद्रता हो या लक्ष्मी का वास ना हो, तो सुबह में अर्गला एवं कीलक स्त्रोत का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण शरीर में आलस्य हो या अधिक सोने के कारण कार्य अधूरे रह जा रहे हो, तो सुबह एवं रात में सोते समय रात्रिसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण विवाह में बाधा उत्पन्न होती है, या संबंध तय नहीं हो पा रहा है, तो शुक्र स्तवराज का पाठ करना चाहिए।

शुक्र के दोष के कारण यदि बार––बार चोट लगती है, या शरीर में विकार उत्पन्न होता है, तो शुक्र कवच का पाठ करना चाहिए।

## शुक्र ग्रह के साधारण उपाय

रोजाना सुबह स्नान करने के पश्चात तुलसी के पौधे को सींचकर आगे लिखे मंत्र का एक बार पाठ करें। फिर वहीं पर खड़े होकर तुलसी कवच का पाठ करें।

1– अपने जीवनसाथी से ही संबंध रखें।

2– कन्याओं और पराई स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

## शुक्र ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

शु क्र के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शुक्रवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 31 शुक्रवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको सफेद रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शुक्र के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 21 माला का जप करना चाहिए। व्रत के दिन मीठा चावल या दूध से बना पदार्थ खुद खाना चाहिए एवं एक आंख वाले आदमी या सफेद गाय को खिलाना चाहिए। व्रत के अंतिम शुक्रवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इसके बाद चांदी, सफेद कपड़े, खीर आदि गरीबों के बीच दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से शुक्र अनुकूल होगा और आपको आर्थिक लाभ हो सकता है तथा आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल होगा।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

## शुक्र ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए अनार, सरपोंखा या अरण्ड मूल की जड़ को सफेद कपड़े में सिलकर शुक्रवार या भरणी, पूर्व फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

## शुक्र ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सरपोखों, अनार की जड़, सूखे आंवले।
जड़ी– अरंडे की जड़।

## शुक्र ग्रह के लिए स्नान और दान

स्नान करते समय जल में छोटी इलायची, नींबू का रस अथवा इत्र मिलाकर स्नान करने से शुक्र प्रसन्न होते हैं।

शुक्र के लिए बासमती चावल, घी, चांदी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, कपूर, धूप और अगरबत्ती, इत्र और रेशमी वस्त्र का यथाशक्ति दान करना चाहिए।

## शुक्र ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| 11 | 6 | 13 |
| 12 | 10 | 8 |
| 7 | 14 | 9 |

### तांत्रिक यंत्र

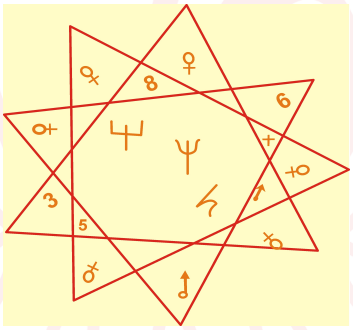

# शनि ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

**ओं कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात्।**

**मन्दः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः काश्यपः।**
**स्वामी नक्रभकुम्भयोर्बुधसितौ मित्रे समश्चाऽङ्गिराः।।**
**स्थानं पश्चिमदिक्प्रजापति यमौ देवौ धनुष्यासनः।**
**षटत्रिस्थः शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात् मंगलम्।।**

## शनि ग्रह के लिए रत्न

### भावगत/राशिगत शनि का फल

आपकी कुण्डली में शनि कर्क राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। अपने शुरूआती बचपन में आपके पिता को कोई आघात लग सकता है और आप कुछ परेशानियों का सामना कर सकते हैं, लेकिन अपने प्रयासों के बल पर आप अपने भाग्य में सुधार करेंगे। अपने जीवन में मध्य काल में आप अपने प्रिय जीवनसाथी के साथ जीवन के सभी सुखों का आनन्द प्राप्त करेंगे। लेकिन दूसरों से प्रभावित होने के कारण आप कुछ हद तक कुटिल हो सकते हैं और अपने संबंधियों से प्रतिकूल भाव रख सकते हैं। आपका स्वास्थ्य बहुत उत्तम नहीं हो सकता है और कभी–कभी आप छोटी बीमारियों से ग्रसित हो सकते हैं, आपको नेत्रों की कुछ समस्यायें हो सकती हैं। यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो आपकी माता का स्वास्थ्य और सुख चिन्ता का कारण हो सकता है।

आपकी कुण्डली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। इस कारण से आप अपने परिवार और आर्थिक मामलों में बहुत

भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। कठिन परिश्रम करने के बावजूद आपकी आय बहुत सार्थक नहीं हो सकती है, घर में पर्याप्त जगह नहीं हो सकती है और जीवन शैली बहुत संतोषप्रद नहीं हो सकती है। यदि शनि कुण्डली में बली नहीं है, तो प्रायः आपके परिवार में झगड़े हो सकते हैं। आप घरेलू कलह के कारण बहुत व्यथित हो सकते हैं और कटु या कड़े शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं, आपके परिवार के कुछ सदस्य अलग हो सकते हैं और आप से संबंध भी तोड़ सकते हैं। आपके संबंधियों को आपसे सहानुभूति नहीं हो सकती है और आपकी कीर्ति में कमी आ सकती है। यदि मंगल शनि के साथ स्थित है, तो आपके किसी सगे छोटे भाई या बहन की मानसिक स्थिति का क्षय आपकी चिन्ता का कारण हो सकता है। यदि शनि कुम्भ या मकर या तुला राशि में स्थित है, तो यह शुभ परिणाम देगा।

## भावगत/राशिगत शनि का विशेष फल

आपकी जन्मकुण्डली में शनि कर्क राशि में स्थित है। बचपन में किसी बीमारी के कारण आपके शरीर के अंगों में स्थायी दोष रह सकता है। मां–बाप से पर्याप्त प्यार प्राप्त ना होने के कारण आपको भावनात्मक चोट लग सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। आप अपना निवास स्थान या कार्यस्थल कई बार बदल सकते हैं। आपके मुंह में कोई विकार हो सकता है और सहकर्मियों के साथ तालमेल की कमी हो सकती है।

शनि के राशिगत अथवा भावगत दोष के निवारण के लिए शनि गायत्री मंत्र का जप रोजाना आसन पर खड़े होकर एक निश्चित संख्या में करें।

यदि शनि की दशा अथवा गोचर के दौरान किसी तरह के रोग या दुर्घटना की वजह से जीवन पर संकट आए, तो मार्कण्डेय जी द्वारा रचित भगवान शंकर के महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि आपकी संतान आपके बताये रास्ते पर ना चलकर आपकी अवहेलना करती है, तो आपको शनि गायत्री का नियमित 28 या 108 बार जप करना चाहिए। शाम के समय हनुमान जी का ध्यान करते हुए हनुमान जी के भुजंग स्तोत्र या शिवताण्डव स्तोत्र का पाठ करने से आपको लाभ होगा।

शनि के साढ़ेसाती, गोचर काल अथवा शनि की दशा या अन्तर्दशा के अनुसार, यदि कुफल प्राप्त हो रहा हो, तो शनि स्तवराज मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि शनि की दशा या गोचर के दौरान आपको बार––बार चोट लगती हो अथवा कोई रोग आपको परेशान कर रहा हो, तो आपको शनैश्चराष्टक स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

## शनि ग्रह के साधारण उपाय

सोमवार, बुधवार एवं शनिवार को कडुवे तेल का मालिश करके स्नान करें और साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दें। साफ–सुथरा रहने से शनि के सामान्य दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। स्नान के पश्चात रोजाना भगवान शंकर जी, हनुमान जी या भैरव जी की स्तुति करनी चाहिए। टूटे बर्तन या आईना या चारपाई का प्रयोग ना करें।

नौकरों, दासों, मजदूरों व मेहनतकश लोगों का हक ना मारें। उनका व्यर्थ में अपमान ना करें।

## शनि ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 19 माला का जप करना चाहिए। उसके बाद साफ पानी, काले तिल का बीज, काला या नीला फूल, लौंग, गंगाजल, चीनी एवं दूध एक बर्तन में लेकर पूर्वाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डालें। इस दिन केवल उड़द दाल एव तेल से बनी कोई भोज्य सामग्री खानी चाहिए एवं दान करनी चाहिए। व्रत के अंतिम दिन हवन के साथ पूर्णाहूति करें और तेल से बनी कोई चीज, काला कपड़ा, चमड़े का जूता आदि दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से आपको झगड़े एवं वाद–विवाद में सफलता प्राप्त होगी। फैक्ट्री मालिक एवं लोहे या स्टील का कारोबार करने वालों को काफी सफलता प्राप्त होगी।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

## शनि ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण

करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शनि के लिए बिछुआ की जड़ नीले कपड़े में सिलकर शनिवार या पुष्य, अनुराधा या उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

## शनि ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– काला तिल, काला उड़द, बिछुआ की जड़।
जड़ी– धतुरे की जड़।

## शनि ग्रह के लिए स्नान और दान

स्नान करते समय जल में धान का छिलका, जड़ सहित दूब अथवा काला तिल डालकर स्नान करने से शनि जनित दोषों का नाश होता है। शनि की प्रसन्नता के लिए बड़ी ईलायची, जायफल, लौंग, काला या नीला कपड़ा,

मोटे अनाज, काली तिल, लोहे का सामान, गूगल और साबूत उड़द का अपनी शक्ति अनुसार दान करना चाहिए।

## शनि ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| 12 | 7 | 14 |
| 13 | 11 | 9 |
| 8 | 15 | 10 |

## तांत्रिक यंत्र

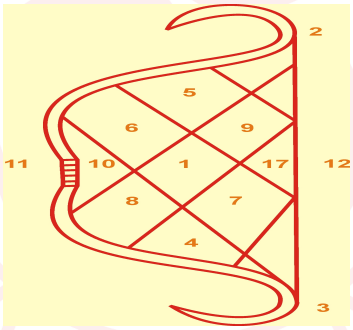

# राहु ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

**ओं नीलवर्णाय विद्महे सैंहिकेयाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।**

**राहुः सिंहलदेशजश्च निर्ऋतिः कृष्णाङ्गशूर्पासनो।**
**यः पैठीनसि गोत्रसम्भवसमिद् दूर्वामुखो दक्षिणः।।**
**यः सर्पाद्यधिदैवते च निर्ऋतिः प्रत्याधिदेवः सदा।**
**षट्त्रिस्थः शुभकृच सिंहिकासुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।**

## राहु गग्रह के लिए रत्न

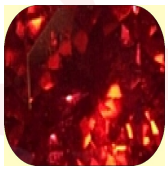

### भावगत/राशिगत राहु का फल

आपकी कुण्डली में राहु पांचवें भाव में स्थित है। इस कारण से आप बहुत बृद्धिमान होंगे और किसी व्यवहारपरक क्षेत्र में उत्तम शिक्षा ग्रहण करने के मामले में बहुत भाग्यशाली होंगे। हालांकि संतान के जन्म के मामले में यह स्थिति उत्तम नहीं है। आपका आनुमानित निवेशों की तरफ गहरा रूझान हो सकता है, लेकिन यदि आप अपने भ्रमों से मुक्त नहीं हुए तो इसमें बुरी तरह से नुकसान उठाने के बाद आप शीघ्र ही अधिक समझदार हो जायेंगे।

आपकी कुण्डली में राहु किसी राशि में अकेले स्थित है, जो किसी प्रतिकूल त्रिक भाव (छठे, आठवें या बारहवें) के साथ नहीं मिलता है। इसके अलावा, यह अपने नक्षत्र में स्थित है। यह एक अनुकूल युति है और राहु की स्थिति वाले भाव के महत्व के मामले में आप भाग्यशाली होंगे। राहु की भुक्ति या दशा के दौरान इसके प्रभाव में बढ़ोत्तरी होगी। हालांकि आप इसके अन्तिम चरण के दौरान कुछ छोटी खीज पैदा करने वाली समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु लग्न से या तो केन्द्र भाव में या त्रिकोण भाव में स्थित है। यह एक अनुकूल युति है, इस स्थिति में होने के कारण राहु इस कुण्डली में एक तात्कालिक लाभप्रदाता का काम करता है। आप शैक्षिणिक और/या बौद्धिक कार्यों को उत्तम प्रकार से करेंगे और अपने व्यवसाय के क्षेत्र में आपका सुधार होगा। आप बहुत भाग्यशाली होंगे तथा राहु की भुक्ति या दशा के दौरान आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। हालांकि आप इसके अन्तिम चरण के दौरान कुछ छोटी खीज पैदा करने वाली समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

## भावगत/राशिगत राहु का विशेष फल

## राहु ग्रह के साधारण उपाय

स्नान करते समय अपनी नाभि में खुशबुदार तेल का लेप करके पूर्वाभिमुख होकर स्नान करें। विष्णु, शिव या दुर्गा का स्मरण कर दिनचर्या शुरू करें। ग्रहण के दौरान, सूर्यास्त से ठीक पहले या बाद में तथा आस–पास में किसी की मृत्यु के बाद शव उठने तक भोजन, मैथुन और कटु वाणी का प्रयोग ना करें। भोजन करते समय अपना सिर ढक कर ना रखें और दक्षिण की ओर मुँह करके भोजन ना करें।

1– अस्पतालों, अनाथालयों अथवा सैनिक संस्थानों में कार सेवा करें।
2– सफाई कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार ना करें।

## राहु ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

राहु के लिए कोई भी दिन निश्चित नहीं किया गया है। राहु के लिए शनिवार का व्रत किया जा सकता है।

राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन

स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

## राहु ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

राहु के लिए मलय चंदन की जड़ की माला बुधवार या शनिवार या आर्द्रा, स्वाति या शतभिषा नक्षत्र में शाम 4 बजे के आस–पास अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

## राहु ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी

लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– चंदन की लकड़ी।
जड़ी– अष्टगन्ध मूल।

## राहु ग्रह के लिए स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा आदि डालकर स्नान करने से राहु जनित दोषों का निवारण होता है। राहु की प्रसन्नता के लिए ऊन का कपड़ा, जटादार पानी वाला नारियल, कम्बल एवं पेठा बांस की टोकरी में धातु का बना सर्प रखकर दान करना चाहिए।

## राहु ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| 13 | 8 | 15 |
| 14 | 12 | 10 |
| 9 | 16 | 11 |

तांत्रिक यंत्र

# केतु ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

**ओं धूम्रवर्णाय विद्महे कपोतवाहनाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात्।**

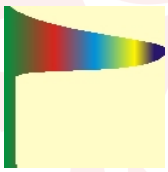

**केतुर्जैमिनिगोत्रजः कुशसमृद् वायव्यकोणे स्थितः।**
**चित्राङ्गध्वज लाञ्छनो हिमगुहो यो दक्षिणाशामुखः।।**
**ब्रह्मा चैव सचित्र चित्रसहितः प्रत्याधिदेवः सदा।**
**षट्त्रिस्थः शुभकृच बर्बरपतिः कुर्यात् सदा मङ्गलम्।।**

## केतु ग्रह के लिए रत्न

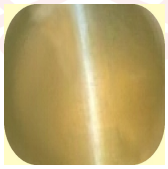

### भावगत/राशिगत केतु का फल

आपकी कुण्डली में केतु ग्यारहवें भाव में स्थित है। इस कारण से आप कुछ मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप नए लोगों के साथ मित्रता कर सकते है, अधिकतर उसमें से विभिन्न समुदायों और/या धर्मों के हो सकते हैं। यदि एकादशेश आपकी कुण्डली में सुव्यवस्थित नहीं है, तो आपकी आय में गिरावट आ सकती है, लेकिन यदि

सुव्यवस्थित है, तो आपकी आय में बढ़ोत्तरी होगी, लेकिन आपको कभी–कभी उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। यदि केतु किसी अुशभ ग्रह से पीड़ित है, तो आपके कुछ पुराने मित्र आपके शत्रु बन सकते हैं और आपके लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में केतु प्रतिकूल आठवें भाव में स्थित नहीं है और यह चंद्रमा के निकट (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) स्थित है। आपको अपनी आंखों से संबंधी कुछ परेशानियां हो सकती हैं। फिर भी कई संदर्भों में यह एक अनुकूल योग है। मंगल ग्रह की दशा एवं भुक्ति अवधि के दौरान, अपने जीवन में किसी समय, कर्क लग्न के किसी व्यक्ति से आपके मिलने की संभावना है– जिससे कि आप लाभ अर्जित करेंगे।

## केतु ग्रह के साधारण उपाय

स्नान करते समय अपनी नाभि में खुशबुदार तेल का लेप करके पूर्वाभिमुख होकर स्नान करें। विष्णु, शिव या दुर्गा का स्मरण कर दिनचर्या शुरू करें। ग्रहण के दौरान, सूर्यास्त से ठीक पहले या बाद में तथा आस–पास में किसी की मृत्यु के बाद शव उठने तक भोजन, मैथुन और कटु वाणी का प्रयोग ना करें। भोजन करते समय अपना सिर ढक कर ना रखें और दक्षिण की ओर मुँह करके भोजन ना करें।

1– अस्पतालों, अनाथालयों अथवा सैनिकों संस्थानों में कार सेवा करें।
2– सफाई कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार ना करें।

## केतु ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

केतु के लिए कोई भी दिन निश्चित नहीं किया गया है। केतु के लिए शनिवार का व्रत किया जा सकता है।

केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन

स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

## केतु ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

केतु के लिए असगन्ध की जड़ को काले या पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

## केतु ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी

लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सात अनाज (उड़द, मूंग, गेहूँ चना, जौ, चावल, कंगनी)।
जड़ी– वट वृक्ष की जड़।

## केतु ग्रह के लिए स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा एवं खुशबुदार इत्र आदि डालकर स्नान करें। केतु की प्रसन्नता के लिए रंग–बिरंगे कम्बल, कस्तूरी, बिस्तर, मुँह देखने का शीशा, साबुत उड़द, लाल अनार आदि को बांस की टोकरी में रखकर दान करना चाहिए।

## केतु ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| 14 | 9 | 16 |
| 15 | 13 | 11 |
| 10 | 17 | 12 |

तांत्रिक यंत्र

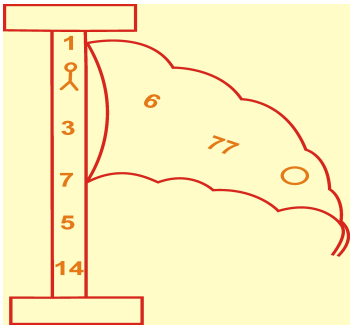


# मिथुन लग्न के लिए रत्नों का चुनाव

अपनी समस्याओं या कष्टों से निजात पाने के लिए या भाग्योदय के लिए या शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आवश्यकतानुसार रत्न धारण करें।

## माणिक रत्न धारण करने के लिए सुझाव

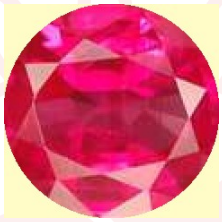

आपकी कुण्डली में सूर्य तीसरे भाव का स्वामी है, आपको माणिक नहीं धारण करना चाहिए।

यदि आप हड्डियों के रोग से ग्रसित हैं, तो आपको माणिक धारण करने से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली मे सूर्य अकारक ग्रह है, आप माणिक धारण ना करें।

आपकी राशि मेष, सिंह, वृश्चिक या धनु है। आप माणिक धारण कर सकते हैं।

## मोती रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में चंद्रमा दूसरे भाव का स्वामी होकर हमेशा शुभ फल देगा। आपके लिए मोती धारण करना शुभ होगा।

यदि आप मानसिक रूप से अशांत रहते हों या सर्दी–कफ आदि से ग्रसित रहते हों या शरीर में कैल्सियम की

कमी हो और आपकी कुण्डली में चंद्रमा पापी ग्रह राहु एवं शनि के साथ स्थित नहीं हो तो मोती धारण करने से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा अकारक ग्रह है। यदि संभव हो तो मोती धारण करने से बचें।

## मूंगा रत्न धारण करने के लिए सुझाव

यदि आपके विवाह में बाधायें आ रही हैं या विवाह में देरी हो रही है, तो आपको मूंगा धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष उपस्थित है, आपको मूंगा धारण करना चाहिए।

यदि आप रक्त, मांस, मज्जा आदि संबंधी रोगों से ग्रसित हैं, तो आपको मूंगा धारण करने से लाभ होगा।

आपको यथासंभव मूंगा धारण करने से बचना चाहिए।

## पन्ना रत्न धारण करने के लिए सुझाव

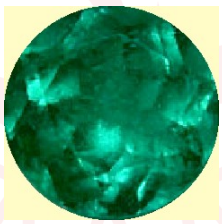

आपकी कुण्डली में बुध लग्न एवं चौथे भाव का स्वामी है। आपको पन्ना धारण करने से लाभ होगा।

यदि आप बौद्धिक विकृति, शिक्षा प्राप्ति में बाधा, मिर्गी, पागलपन एवं वाणी दोष से पीड़ित हैं, तो पन्ना धारण करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

शारीरिक, मानसिक एवं अन्य प्रकार के लाभ के लिए आपको पन्ना धारण करना चाहिए।

आपकी राशि मेष, कर्क या वृश्चिक है। आपको कुछ कम लाभ प्राप्त हो सकता है।

## पुखराज रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में गुरु सातवें एवं दसवें भाव का स्वामी होकर शुभ फल प्रदान करता है। आपको पुखराज धारण

करना चाहिए।

यदि आपके विवाह में बाधा आ रही है या विवाह में देरी हो रही है या विवाह के पश्चात दाम्पत्य जीवन खुशहाल नहीं है, तो आपको गहरे पीले रंग का पुखराज अवश्य धारण करना चाहिए।

यदि आप कपास, वस्त्र, साहित्य या बौद्धिक क्षेत्र से संबंधित किसी व्यवसाय में संलग्न हैं, तो आपको पुखराज धारण करने से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में गुरु को केन्द्राधिपत्य दोष है। बहुत जरूरी होने पर ही पुखराज धारण करें।

## हीरा रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में शुक्र पांचवें एवं बारहवें भाव का स्वामी होकर अशुभ फल देगा। आपको हीरा धारण करने से लाभ प्राप्त हो सकता है।

यदि आपको विवाह संबंधी बाधा आ रही है अथवा विवाह में देरी हो रही है या विवाह पश्चात वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं है या किसी कारणवश स्त्री–सुख प्राप्त नहीं हो रहा है, तो आपको हीरा धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में शुक्र सबसे अधिक शुभ ग्रह है, आपको हीरा धारण करने से लाभ प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र चौथे स्थान में कन्या राशि में है, आपको हीरा अवश्य धारण करना चाहिए।

यदि आप खाद्य पदार्थों, फल, रस, सौन्दर्य प्रसाधनों या ऐशो–आराम की वस्तुओं के व्यवसाय में संलग्न हैं, तो हीरा धारण करना आपके लिए लाभदायक होगा।

## नीलम रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में शनि लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है एवं भाग्य भाव का स्वामी भी है। नीलम धारण करना आपके लिए लाभदायक होगा।

## गोमेद रत्न धारण करने के लिए सुझाव

राहु किसी विशेष राशि का स्वामी नहीं होता है, अतः राहु की शुभता एवं अशुभता का विचार जन्मकुण्डली में राहु की स्थिति (भाव एवं स्थिति) के आधार पर शनि की स्थिति देखकर किया जाता है।

आपकी कुण्डली में कालसर्प दोष लागू हो रहा है। आपको गोमेद धारण करना चाहिए, भले ही राहु–केतु किसी भी भाव में हों।

आपकी कुण्डली में राहु केन्द्र भाव (1, 4, 7, 10) या त्रिकोण भाव (5, 9) में स्थित है। गोमेद धारण करना आपके लिए लाभदायक होगा।

जन्मकुण्डली में शनि की स्थिति के अनुसार गोमेद धारण करना चाहिए, अन्यथा हानि भी हो सकती है।

## लहसुनियॉ रत्न धारण करने के लिए सुझाव

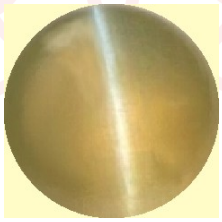

केतु किसी विशेष राशि का स्वामी नहीं होता है, अतः केतु की शुभता एवं अशुभता का विचार जन्मकुण्डली में केतु की स्थिति (भाव एवं राशि) के आधार पर किया जाता है।

यदि आपको किसी प्रकार का अज्ञात भय, आतंक, दुर्घटना, कलंक की संभावना हो या किसी प्रकार के मानसिक रोग में फंसे हैं, तो आपको लहसुनिया धारण करना चाहिए।

यदि कोई आकस्मिक कष्ट संभावित हो तो लहसुनिया धारण करने से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में केतु लग्न एवं चंद्रमा दोनों से केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। आपको लहसुनिया धारण करना चाहिए।

लहसुनिया बिना किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह के ना पहनें। लहसुनिया अत्यंत कम समय के लिए धारण किया जाता है। लाभदायक परिणाम प्राप्त होने के बाद इसे विसर्जित कर देना चाहिए।

### ज्योतिषीय परामर्श –

यदि आप कालसर्प दोष, मातृ, पितृ दोष से अशुभ फल प्राप्त कर रहे हैं या दुख, दरिद्रता, अपमान, रोग, शत्रु, कर्ज आदि से लम्बे समय से परेशान है, तो आप तीन रत्नों का लॉकेट या अंगूठी एक साथ धारण करें।

### लाकेट –

1– पन्ना, 2– हीरा, 3– नीलम।

### अँगूठी –

1– हीरा (तर्जनी में)

2– नीलम (मध्यमा में)

3– पन्ना (अनामिका में)

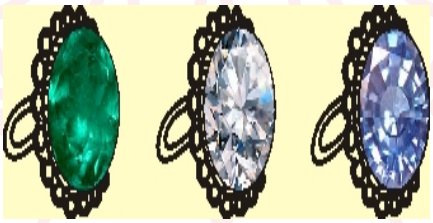

### अन्य महत्वपूर्ण सुझाव –

1– भाग्यवर्द्धक रत्न– नीलम।

2– कार्य व्यवसाय, नौकरी, धनदायक रत्न– पुखराज।

3– संतान, शिक्षा, ख्यातिदायक रत्न– हीरा।

4– भीषण कष्ट, रोग, शत्रु या हानिकारक रत्न– मूंगा, माणिक।

# क्पेबसंपउमत

**The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.**

**www.webjyotishi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, ww.webjyotishi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.**

**www.webjyotishi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.**

**All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.**

**Wishing the very best – prosperity and happiness.**

Prepared by webjyotishi.com on 07 November 2017, 02:08:54PM
Please visit us at https://www.webjyotishi.com Email: mindsutra@mindsutra.com
Phone: +91 98181 93410

**MindSutra Software Technologies**
**A-16, Ramdutt Enclave, Milap Nagar,**
Uttam Nagar, New Delhi-110059